सी-डैक
CDAC

अभिव्यक्ति

प्रथम अंक

सितम्बर 2009

वार्षिक हिन्दी पत्रिका

सम्पादक:
वी. एन. शुक्ला
जे. सी. सेठी

प्रगत संगणन विकास केन्द्र

अभिव्यक्ति

संपादक

वी. एन. शुक्ला

जे. सी. सेठी

संपादन सहयोग

वी. के. शर्मा

गौर मोहन

सुभाष चंद

प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं उनसे सी–डैक, नोएडा और संपादकों का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सी-डैक
CDAC

प्रगत संगणन विकास केन्द्र

अनुसंधान भवन, सी–56/1, संस्थागत क्षेत्र

सेक्टर– 62, नोएडा– 201307

फोनः 0120– 2402551–60, फैक्स– 0120–2402569

विषय सूची

क्र.सं.	रचना	लेखक/संकलनकर्त्ता	पृष्ठ सं.
01	जिग्बी नेटवर्क तकनीक व इसकी उपयोगिता (लेख)	डॉ. प्रेम चन्द्र जैन	11
02	ई–लर्निंग और सी–डैक नोएडा का योगदान (लेख)	संतोष कुमार, लक्ष्मी कल्याणी, वी.के.शर्मा	16
03	बिछड़ गए बचपन के साथी (कविता)	रत्नेश कुमार सिंह	19
04	पत्थर कहते हैं (कविता)	शंकर दत्त	20
05	ग्रेफीन से बनेगी चिप (लेख)	हर्ष सक्सेना	21
06	प्रकृति की पुकार (कविता)	निशा पाण्डेय	22
07	संस्थान में पर्यावरण के लिए हमारा कर्त्तव्य (लेख)	अमित गुप्ता	23
08	कवि के भाव का आदर करता हूँ (कविता)	पार्थ. पी. चट्टाराज	24
09	केरल दर्शन (यात्रा विवरण)	विकास कुमार	26
10	एक जबरदस्त हादसा (कविता)	मुकुल कुमार	28
11	प्रायश्चित (कहानी)	श्वेता कुलश्रेष्ठ	29
12	सामान्य ज्ञान (सामान्य ज्ञान)	आशुतोष पाण्डेय	30
13	बीबी हो बच्चे हों और प्यारा सा घर भी हो (कविता)	गौरव गोत्रा	31
14	योग बदलता है जीने का अंदाज (लेख)	सुभाष चंद	32
15	आज की बहस (लेख)	डॉ. सुमेधा शुक्ला	34
16	मुन्ने का रिश्ता (हास्य कविता)	सुलभ अग्रवाल	35
17	फिर कोई बेटी न पैदा हो तेरी जमीन पर (कविता)	गौरव गोत्रा	36
18	सी–डैक, नोएडा ओपिनीयन पॉल (लेख)	विकास कुमार	37
19	जिंदगी की किताब (कविता)	विकास कुमार	40
20	बहारों को देखा है मैंने पतझड़ में झड़ते हुए (कविता)	मनोज पुरोहित	41
21	लेखनी (लेख)	मुकेश	42
22	बुढ़ापा : एक अभिशाप (लेख)	नीरू शर्मा	43
23	हास्य कविता (कविता)	सुलभ अग्रवाल	44
24	माँ की करूणा (कविता)	धर्मेन्द्र कुमार शर्मा	45
25	जैसे कि माँ थपक के, मुझ को सुला रही हैं (कविता)	गौरव गोत्रा	46
26	राजभाषा विभाग द्वारा जारी वर्ष 2009–2010 के वार्षिक कार्यक्रम के आधार पर सी–डैक, नोएडा द्वारा प्राप्त किए जाने वाले लक्ष्य	(संकलन)	47
27	राजभाषा नीति संबंधी प्रमुख निर्देश		48

सी-डैक
CDAC

महानिदेशक, सी-डैक का संदेश

यह हम सब के लिए खुशी की बात है सी–डैक, नोएडा ''अभिव्यक्ति'' नामक हिन्दी पत्रिका का प्रथम प्रकाशन कर रहा है और इस संगठन में इस तरह का हिन्दी में यह प्रथम प्रयास है। यहां पर तकनीकी क्षेत्र में कार्यरत इंजीनियरों एवं वैज्ञानिकों ने अपनी कोमल भावनाओं को अभिव्यक्त करते हुए यह बताने का प्रयास किया है कि वे अन्य लेखकों की तुलना में किसी भी दृष्टि से कम नहीं हैं। इससे यह सिद्ध करने का प्रयास है कि वैज्ञानिक समुदाय को भी भाषा और संस्कृति से स्नेह है। सी–डैक ने अपने विचारों एवं कोमल भावनाओं को हिन्दी में व्यक्त करतें हुए राष्ट्र भाषा में अपनी निष्ठा का प्रदर्शन किया है और इस दिशा में एक कदम और आगे बढ़ाया है।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

राजन टी जोसफ

(राजन टी जोसफ)
महानिदेशक, सी–डैक

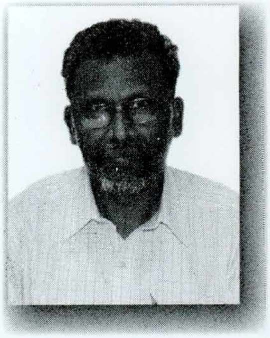

कार्यकारी निदेशक, सी-डैक, नोएडा का संदेश

भारत के संविधान में हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में अपनाया गया है। इसके अंतर्गत बनाए गए अधिनियमों, नियमों आदि का अनुपालन करना सांविधिक अपेक्षा है। अतः हमारा नैतिक कर्तव्य है कि हम अपने नित्य कार्यों में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग अवश्य करें। इन्हीं उपायों के रूप में सी–डैक, नोएडा द्वारा गृह पत्रिका अभिव्यक्ति का शुभारंभ किया गया है।

अभिव्यक्ति का प्रथम अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मैं गर्व महसूस कर रहा हूँ। संगठन के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने विभिन्न विषयों पर अपनी कृतियों में बहुमूल्य विचार व्यक्त करते हुए अपनी क्षमता का सराहनीय प्रदर्शन किया है। आशा है कि अभिव्यक्ति का प्रथम अंक आपको पसंद आएगा। मुझे विश्वास है आप अपने बहूमुल्य सुझाव देकर इस पत्रिका के आगामी अंको को ऊँचाईयां प्रदान करते हुए इस संगठन को गौरवान्वित करेंगे।

जार्ज वर्कि

डॉ. जार्ज वर्की

कार्यकारी निदेशक

संपादकीय

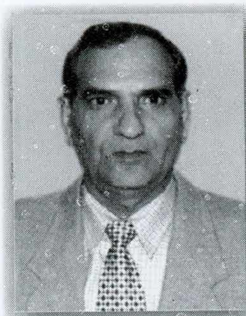

सी–डैक, नोएडा अर्थात् प्रगत संगणन विकास केन्द्र, नोएडा की स्थापना सन् 1984 में हुई थी। उस समय यह भारतीय इलेक्ट्रॉनिकी अनुसंधान एवं विकास केन्द्र के नाम से जाना जाता था। यह भारत सरकार, सूचना प्रौद्योगिकी विभाग की एक वैज्ञानिक संस्था की संघटक ईकाई है। इसके दो स्कंध है नामशः अनुसंधान एवं विकास स्कंध तथा शैक्षणिक स्कंध। इस केन्द्र का अनुसंधान एवं विकास स्कंध डिजाइन एवं विकास के क्षेत्र में कार्य करता रहा है। इसने स्वास्थ्य सूचना विज्ञान, एम्बेडेड सिस्टम, भाषा प्रौद्योगिकी, ई–प्रशासन आदि क्षेत्रों में अपार विशेषज्ञता प्राप्त की है।

शैक्षणिक स्कंध में उन्नत सॉफ्टवेयर के क्षेत्र में गुणवत्ता युक्त जनशक्ति तैयार की जाती है। यहां पर विभिन्न क्षेत्रों में एम.सी.ए., एम.टैक, एम.बी.ए., बी–टेक कोर्स कराए जाते हैं एवं उन्नत विषयों में विभिन्न स्नातकोत्तर कार्स भी कराए जाते हैं। यह नई दिल्ली स्थित गुरू गोविन्द सिंह इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय से जुड़ा है।

इस केन्द्र में शुरू से ही हिन्दी के प्रगामी प्रयोग पर बल दिया जाता रहा है। लेकिन हाल ही में अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सामूहिक प्रयासों से इसमें काफी प्रगति हुई है। इन्हीं प्रयासों के फलस्वरूप सी–डैक, नोएडा में हिन्दी की गृह पत्रिका ''अभिव्यक्ति'' का प्रकाशन किया जा रहा है। इससे हिन्दी के उत्तरोत्तर प्रयोग को काफी बल मिलेगा।

हमें आशा है कि पत्रिका का यह प्रथम अंक आपको पसंद आएगा तथा अन्य लेखक भी अपनी रचनाएं लिखने के लिए प्रेरित होंगे।

(वी. एन. शुक्ला)
निदेशक (विशिष्ट अनुप्रयोग)

(जे. सी. सेठी)
हिन्दी अधिकारी

जिग्बी नेटवर्क तकनीक व इसकी उपयोगिता

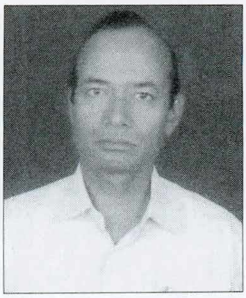

सारांश

जिग्बी नेटवर्क कम कीमत और कम पावर पर काम करने वाली तकनीक है। इसलिए इसको कंट्रोल व मॉनीटर करने वाली एप्लीकेशनों में उपयोग किया जा सकता है। पावर की कम खपत की वजह से बैटरी का जीवन काफी बढ़ जाता है जिससे बेतार (वायरलैस) वाली डिवाईसें सालों साल काम कर सकती हैं। मेश (Mesh) नेटवर्क जिग्बी को काफी विश्वसनीय बना देता है। यह तकनीक वायरलैस सेंसर नेटवर्क (WSN) के लिए काफी उपयोगी है। जिग्बी अब संसार में लाखों लोगों के घरों में घुसने की तैयारी कर रही है। क्योंकि दूसरी तकनीकों में ये खुबियां नहीं हैं जो जिग्बी में है।

1. प्रस्तावना

पिछले कुछ सालों में बेतार संचार व्यवस्था ने बाजार का रूख काफी कुछ बदल दिया है। जी.एस.एम. (ग्लोबल मोबाइल फोन संचार) स्टेन्डर्ड, डब्ल्यु.एल.ए.एन (वायरलैस लोकल एरिया नेटवर्क) स्टेन्डर्ड, ब्ल्यूटूथ (वायरलैस पर्सनल एरिया नेटवर्क स्टैन्डर्ड) ने बाजार में अपनी पहचान बना ली है। डब्ल्यु.एल.ए.एन (डब्ल्यु लेन) एक ही बिल्डिंग में बहुत सारे लैपटाप व पर्सनल कम्प्यूटरें को नेटवर्क से जोड़ता है। यह 2.4 गीगाहर्ट्ज पर बहुत ही तीव्र गति (54 मेगा बिट प्रति सेकण्ड) की डाटा बिल्डिंग के अंदर भेज सकता है। ब्ल्यूटूथ मोबाइल फोन को हेन्ड फ्री बना देता है व पर्सनल कम्प्यूटर के की–बोर्ड, माऊस, प्रिंटर इत्यादि को बिना तारों के जोड़ देता है।

2. जिग्बी तकनीक

जिग्बी स्टैन्डर्ड बैटरी को कम कीमत पर ज्यादा जीवन (महीनों से लेकर सालों तक) प्रदान करने वाली तकनीक है। यह 65,000 सेन्सरों को एक नेटवर्क में जोड़ सकती है। यह डाटा को कम दूरी पर ज्यादा सुरक्षा के साथ व ज्यादा विश्वसनीयता के साथ भेज सकती है। यह डाटा को ज्यादा से ज्यादा 250 किलो बिटस प्रति सेकण्ड (के.बी.पी.एस.) पर भेज सकती है। जिग्बी का नाम हनी बी (मधुमक्खी) के जिग–जैग तरीके से दूसरी हाईव (Hive) सदस्यों को सूचना देने की वजह से पड़ा। जिग्बी में तीन तरह की सेन्सर नोड होती हैं। पहली तरह की नोड "कोर्डिनेटर" का काम करती है। जहां सारी नोडों की सूचना इकट्ठी होती है। इस तरह की नोड को ज्यादा मेमोरी व ज्यादा पावर की जरूरत होती है। दूसरी तरह की नोड को फुल फंक्शनल डिवाईस (FFD) कह सकते हैं। यह राउटर (Router) का काम करती है। यह नोड सेंसर की सूचना इकट्ठी करके कॉर्डिनेटर नोड को भेज देती है। इसको मध्यम मेमोरी व मध्यम पावर की जरूरत होती है। तीसरी तरह की नोड को रिड्युसड फंक्शनल डिवाईस (RFD) कह सकते हैं। यह नोड सेंसर नोड कहलाती है। यह कम कीमत पर और कम पावर पर काम करती है। यह कम जटिल (कॉम्पलेक्स) होती है व बैटरी से चलती है।

क) जिग्बी प्रोटोकॉल

ओ.एस.आई (OSI) की 7 लेयरों को ध्यान में रखते हुए जिग्बी प्रोटोकॉल की पहली दो लेयरें फिजीकल (PHY) और मेक (MAC) लेयर आई ट्रिपल ई (IEEE) 802.15.4 स्टैन्डर्ड से ली गई हैं। इसके ऊपर की तीन लेयरें नेटवर्क लेयर, सुरक्षा लेयर, व एप्लीकेशन लेयर जिग्बी स्टेन्डे में विकसित हुई हैं। आई ट्रिपल ई 802.15.4 की फिजीकल लेयर यूरोप में 816 मेगा हर्ट्ज पर, अमेरिका में 915 मेगा हर्ट्ज पर व विश्व में 2.4 गीगा हर्ट्ज पर काम करती है। यह डाईरेक्ट सिक्वेन्स स्प्रेड स्पेक्ट्रम (DSSS) व बाईनरी फेज शिफ्ट किईग (BPSK) मोडुलेशन को उपयोग में लेते हुए 816 या 915 गीगा हर्ट्ज पर व

आफसेट–क्वाडरेचर फेज शिफ्ट किईग (O-QPSK) मोडुलेशन को उपयोग में लेते हुए 2.4 गीगा हर्ट्ज पर काम करती है। डाटा रेट 2.4 गीगा हर्ट्ज पर 250 के.बी.पी.एस, 915 मेगाहर्ट्ज पर 40 के.बी.पी.एस. व 868 मेगा हर्ट्ज पर 20 के.बी.पी.एस. उपलब्ध हो सकती है। यह तकनीक 30 से 70 मीटर की दूरी तक काम कर सकती है।

आई ट्रिपल ई 802.15.4 की मेक लेयर सी.एस.एम.ए. / सी.ए. (केरियर सेन्स मल्टीपल एक्सिस कॉलीजन एवाईडेन्स) स्कीम को उपयोग में लाती है। इससे सेंसर नोडें एक दूसरे के डाटा पेकेटों को टक्कर मारने से बचाती हैं। यह 128–बिट की एडवान्स इन्क्रिप्शन स्टेन्डर्ड (AES) तकनीक को काम में लेते हुए डाटा को सुरक्षा प्रदान भी करती है।

जिग्बी नेटवर्क लेयर सेन्सर नोडों को ढूंढने व उनको कॉन्फीगर करने का काम करती है। जिग्बी में तीन तरह की नेटवर्क पद्धति (Topology) अपनाई जा सकती है। इसमें एक तो स्टार, दूसरा मेश व तीसरा कलस्टर ट्री हो सकता है। मेश नेटवर्क विश्वसनीय संचार व्यवस्था प्रदान करता है क्योंकि इसमें नेटवर्क की सारी सेंसर नोडें एक दूसरे से बेतार द्वारा जुड़ी रहती हैं व इस तरह जो नोड 30 से 70 मीटर से भी दूर हो तब भी एक दूसरे नोड के जरिए उसको डाटा भेजी जा सकती हैं। इस पद्धति में नेटवर्क में बाधा डाले बिना सेंसर नोडों को बढ़ा सकते हैं, निकाल सकते हैं, बदल सकते हैं, व दूसरी जगह पर नेटवर्क में रख सकते हैं। तीन तरह की नोडों का हम पहले ही जिक्र कर चुके हैं। इसमें कोर्डिनेटर नोड को ज्यादा मेमोरी की जरूरत पड़ती है क्योंकि इस तरह की नोड में डाटाबेस, ट्रांसेक्शन टेबल, व पेयरिंग टेबल की सूचना रखनी पड़ती है। इस तरह जिग्बी नेटवर्क लेयर राउटिंग को बखूबी निभाती है।

जिग्बी एप्लीकेशन लेयर में एप्लीकेशन सपोर्ट सब–लेयर (APS) एप्लीकेशन फ्रेमवर्क (AF) व जिग्बी डिवाईस ऑब्जेक्ट (ZDO) होती है। एपीएस बाईन्डिंग टेबलों का रख–रखाव करती है। बाईन्डिंग टेबल दो सेन्सर नोडों को उनकी सर्विस के हिसाब से मैच करती है। एक नोड का संदेश दूसरी नोड को भेजती है। एपीएस दूसरी नोड को भी ढूंढने का काम करती है। इस तरह की 240 एप्लीकेशन नोडों को सब–नेटवर्क में परिभाषित कर सकते हैं। जेड.डी. ओ. नोड की भूमिका बताता हैः यानि नोड कोर्डिनेटर है, या राउटर है, या सेंसर नोड है। इस तरह जिग्बी का सॉफ्टवेयर कोड ब्ल्यूटूथ के कोड का एक चौथाई होता है।

ख) पावर की खपत

मेक लेयर में सी.एस.एम.ए. / सी.ए. तकनीक डाटा पैकेटों की टक्कर होने से बचाती है। इस वजह से पैकेट दुबारा भेजने की जरूरत नहीं पड़ती व इस तरह पावर बचाई जा सकती है। इसमें "बात करने से पहले सुनो" तकनीक अपनाई जाती है। परन्तु इस तकनीक में भी नोड को सुनने में पावर की खपत होती है। दूसरी तकनीक "बिकन कोड" है जिसमें 99 प्रतिशत समय नोड सोती रहती है व एक प्रतिशत समय जागती है। ऐसी नोड सिर्फ बिकन संदेश सुनने के लिए जागती है व उस समय अगर उस नोड में डाटा हो तो भेजकर फिर सो जाती है। इस तकनीक में 'बात करो जब डाटा तैयार हों' अपनाई जाती है। यह नोड डाटा भेजने के बाद अभिस्वीकृति (एक्नोलेजमेंट) का इंतजार करती है। अगर निर्धारित समय पर एक्नोलेजमेंट नहीं मिला तो वही डाटा फिर से भेज दिया जाता है। जब नोड जगी होती है तो 10 मिली वाट (mW) पावर खर्च करती है वह जब सोई होती है तो 10 माइक्रोवाट (μW) पावर खर्च करती है। इस तरह एक 750 मिली एम्पीयर आवर (mAh) की (AAA) बैट्री 4 साल व तीन महीने एक सेंसर नोड में काम कर सकती है। जिग्बी नेटवर्क में नए सेंसर को जोड़ने में 30 मिली सेकण्ड (ms) लगते हैं व सोने से जागने की अवस्था में 15 मि.सै. लगते हैं। जबकि ब्ल्यूटुथ में 3 सेकण्ड लगते हैं। राउटर नोड को 32 किलो बाईट (kByte) व सेंसर नोड को 4 किलो बाईट की मेमोरी की जरूरत पड़ती है। सेंसर नोड 8–बिट के माइक्रोकन्ट्रोलर से काम चला सकती है। इस तरह सेंसर नोड काफी सस्ती उपलब्ध हो सकती है।

ग) सेंसर नोड

सेंसर नोड के अन्दर सेंसर, माइक्रोकन्ट्रोलर, व ट्रांससीवर

होता है। सेंसर पर्यावरण को सेन्स करके एनॉलोग (Anolog) सिगनल प्रदान करता है। माइक्रोकन्ट्रोलर में इसको डिजिटल सिगनल में बदल कर प्रोसेस करता है व ट्रांससीवर को भेज देता है। ट्रांससीवर प्रोसेस्ड सिगनल को आर.एफ. (RF) फ्रिक्वेन्सी में बदलकर हवा में भेज देता हैं। सेंसर नोड में लघु ऑपरेटिंग सिस्टम (Tiny OS) काम में लेते हैं जो कि 400 बाईट्स का होता है। इससे नोड में ज्यादा मेमोरी की जरूरत नहीं पड़ती।

३. जिग्बी नेटवर्क की उपयोगिता

जिग्बी नेटवर्क का उपयोग, घर की लाईटें व पंखे, ए.सी. नियंत्रित करने, इन्डस्ट्री की प्रोसेसिंग नियंत्रित करने, बिजली के मीटर पढ़ने, प्रिसिसन खेती करने, व हेल्थकेयर इत्यादि में किया जा सकता है। सेंसर नोड तापक्रम, दबाव, आद्रता (ह्युमेडिटी), एक्सेलरेशन (Motion), केमीकल्स इत्यादि सेंस कर सकता हैं। इस लेख में पांच तरह के उपयोगों पर चर्चा की जा रही है।

क) पौधाघरों में उपयोग

पौधाघरों (ग्रीन हाउसेस) में पौधों पर सेन्सर व एक्च्वेटर लगाते है। एक नोड का डाटा दूसरे नोड को, व दूसरे नोड व पहले नोड का डाटा तीसरे नोड को, इस तरह सारे नोडों का डाटा कोर्डिनेटर नोड को राउटरों की मदद से भेज दिया जाता है। कोर्डिनेटर नोड का डाटा इंटरनेट के द्वारा सर्वर पर भेज दिया जाता हैं। सर्वर पर उपभोक्ता हर पौधे की आद्रता, तापमान, धूप इत्यादि की डाटा का विश्लेषण करके कितना पानी किस पौधे को देना है उसका निर्णय लेता है व यह सूचना पौधे को रिवर्स पाथ लेकर एक्च्वेटर को पहुंचा देता है। एक्च्वेटर पोधे के पास लगे स्प्रीन्कलर को संदेश देता है और वह इष्टतम मात्रा में पानी से पौधे की सिंचाई कर देता है। इस तरह सिमित मात्रा में पानी खर्च होता है व पौधे की आयु भी बढ़ जाती है। विदेशों में अंगूर की बेलों पर यह काफी उपयोगी हो रहा है।

ख) खदानों में उपयोग

खदानों में आर.एफ. सिग्नल का डिफरेक्शन, रिफ्लेक्शन, स्केट्रींग, अटेन्युएशन, मल्टीपाथ प्रोपेगेशन होने के कारण विश्वसनीय व मजबूत बेतार–संचार व्यवस्था कायम करना बहुत ही मुश्किल का काम होता है। खदानें टूटने पर भी बॉडी सेंसर नोडें कामगार के जीवन संबंधी आकड़े मैनेजर को भेज सकती हैं। जिससे समय रहते कामगारों को बचाया जा सकता है। साथ ही खानों में सेन्सर नोड तापक्रम, प्रेशर, नुकसानदायक गैसों (मिथेन, सी.ओ.) के रिसन को सेंस करके डाटा मैनेजर को भेज सकती है। सेंसर नोड बैट्री पर काम करती हैं। इसलिए अगर खान टूट जाती है व बिजली की सप्लाई बंद हो जाती है तब भी सेंसर नोड मैनेजर को बिना परेशानी के डाटा भेज सकती है। वायरलेस–लेन में एक्सिस प्वाइंटों (APs) को मेश नेटवर्क में जोड़ते हैं व हर ए.पी. को सेंसर नोडें स्टार नेटवर्क में जोड़ती हैं। इसके द्वारा वाईस (आवाज़), विडियो (चित्रों) के पैकेट आसानी से भेजे जा सकते हैं क्योंकि वायरलेस–लेन 54 मे. बी.पी.एस. की डाटा दर पर काम करती है। खदानों में सेंसर की जगह पता होती है। जब कामगार इन सेंसरों के पास से गुजरता है तो सेंसर कामगार की विशेष जगह पर होने संबंधी डाटा भेज देते हैं। कामर्शियल सेंसरों को खदानों में टेस्ट करने के बाद ही उपयोग में लाना चाहिए।

ग) अग्निशमन में उपयोग

बाढ़, भूकम्प, सुनामी, तूफान प्राकृतिक आपदाएं हैं व दुर्घटना, नुकसानदायक गैसों का रिसना (लिकेज), जैविक युद्ध, प्रदूषण, आतंकवादी आक्रमण, बीमारी फैलना कृत्रिम आपदाएं कहलाती हैं। इस तरह की आपदाओं को सेंसर नेटवर्क व मल्टी–लेवल बैतार संचार व्यवस्था की मदद से मॉनीटर किया जा सकता है। हम यहाँ अग्निशमन के विषय पर चर्चा करेंगे। इसमें पुलिस, अग्निशमन, लोक स्थास्थ्य, नागरिक सुरक्षा विभागों का आपस में तालमेल बिठाना बहुत जरूरी है। तालमेल बिठाने के लिए ऊपर से निचले स्तर तक वास्तविक समय (Real time) में सूचना पहुंचाना बहुत जरूरी होता हैं। फायर बिग्रेड नुकसानदायक गैसों को मॉनीटर करने, आग में फंसे लोगों को निकालने व आग बुझानें का काम करती है। एम्बुलेंस आग से झुलसे हुए

मरीजों की देख रेख करती है। पुलिस ट्रैफिक कंट्रोल करती है व कानून व व्यवस्था बनाए रखती है। पुलिस व अग्निशमन विभाग सरकारी अधिकारियों के साथ मोबाईल फोन द्वारा संपर्क में रहते हैं। पुलिस व अग्निशमन विभाग को वायरलेस–लेन के द्वारा मोबाइल पुलिस कमाण्ड वेहिकल्स व मोबाईल फायर कमाण्ड वेहिकल्स से जोड़ देते हैं। जबकि फायर फाईटर बॉडी सेन्सरों से युक्त होते हैं व बॉडी सेन्सर बॉडी एरिया नेटवर्क (वायरलेस–बेन) से जुड़े होते हैं। फायर फाईटर आपस में सूचना पहुंचाने के लिए वायरलेस–पेन (जिग्बी) को काम में लेते हैं। फायर फाइटर तापक्रम सेंसर, एक्सप्लोजिव गैस सेंसर, कम्परेस्ड हवा के गेस सेंसर इत्यादि से युक्त होते हैं। थर्मल सेंसर फायर फाईटर के स्यूट के अंदर व बाहर लगे होते हैं। अन्दर का तापक्रम सेंसर बताता है कि स्यूट का थर्मल प्रौटेक्शन घट तो नहीं रहा है व बाहर का तापक्रम सेंसर बाहर की गर्मी का तापक्रम भेजता है। बॉडी सेंसरस फायरमैन की बॉडी का तापक्रम, ब्लड प्रेशर, पल्स रेट इत्यादि की सूचना भेजता है। पोजीशन सेंसर फायर फाईटर की लोकेशन बताता है कि वह एन्टरेन्स से कितनी दूर हैं। कम्परेस हवा का सेंसर कम्परेस हवा के स्तर की सूचना भेजता है। कमांडिंग अफसर फायर ब्रिगेड की व्हीकल में बैठे सारे फायर फाईटर्स का डाटा इकट्ठा करता है व सही निर्णय लेकर फायर फाईटर्स को समय–समय पर सूचित करता रहता है जिससे उनकी जान को खतरा न हो। सेंसिंग सिस्टम स्वचालित होना चाहिए जिससे फायरमैन को सावधान करने की जरूत न पड़े व आग से प्रभावित लोगों को बचाने की कोशिश में लगा रहे। फायर कमाण्ड वेहिकल में लेपटोप पर वर्तमान व भूतकाल के सारे डाटा को लेकर कॉम्प्लेक्स सिमुलेशन करके पूर्वानुमान लगाया जा सकता है कि जिस जगह आग लगी है वहां आगे क्या होने की संभावना है।

घ) स्वास्थ्य देखभाल (हेल्थ केयर) में उपयोग

स्वास्थ्य की पारम्परिक देखभाल (ट्रेडीशनल हेल्थकेयर) जो आजकल अस्पताल व क्लीनिक में होती है उसे उठाकर 'यूबीक्वीट्स हेल्थकेयर' रोगी के घर में लाने की कोशिश कर रहा है। इस हेल्थकेयर का उद्देश्य रोग का शुरू में ही पता लगाना है व जो व्यक्ति जीर्ण रोग से ग्रस्त है उसका रोग बढ़ने से रोकना व उसका ईलाज करना है। इसके लिए बॉडी सेंसरस चाहिए जो आदमी के जैविक संकेतों (बायोलोजिकल सिगन्लस) को लगातार नापता रहे व जिग्बी नेटवर्क, वायरलेस–लेन, वायरलेस–वेन के द्वारा बायोलोजिकल सिगनलस को रोगी व डाक्टर तक पहुंचा सके। बॉडी सेंसर का डाटा जिग्बी नेटवर्क के द्वारा रोगी के मोबाइल फोन या पी.डी.ए. पर पहुंच जाता है जिससे रोगी खुद की स्थिति पता लगा सकता हैं। इसके साथ–साथ मोबाइल फोन से वायरलेस–लेन या वायरलेस–वेन व इंटरनेट के द्वारा मेडिकल सर्वर पर आंकड़े पहुंचा दिए जाते हैं। इससे डाक्टर लौगिन करके रोगी के बारे में सारी जानकारी ले सकता है व रोगी का पिछला विवरण मेडिकल सर्वर से पढ़कर रोगी को बता सकता है कि उसे आगे क्या सावधानी बरतनी है व कौन–कौन सी दवाई लेनी है। मेडिकल सर्वर सब रोगियों का पिछला सारा रिकार्ड रखता है। बॉडी सेंसरस में ई.सी.जी., स्किन टेम्परेचर, ब्लड प्रेशर, ब्रिथिंग, ग्लुकोज व मोशन सेसरों को काम में लेते हैं। पर्यावरण संवेदन (एनवाईरोनमेंट सेंसरस) घर का तापक्रम, आद्रता आदि नापता है। पर्सनल सर्वर व मेडिकल सर्वर के बीच सुरक्षित संचार होना बहुत जरूरी है। दिल का दौरा पड़ने पर आधा एक घंटे के अंदर इसका ईलाज शुरू कर दिया जाए तो रोगी को बचाया जा सकता है। इस हेल्थ केयर से रोगी की अनवरत सूचना मिलते रहने से ऐसे रोगी की तत्काल देखभाल करके उसका दिल का दौरा रोका जा सकता है। जीर्ण रोग जैसे दिल का दौरा, डायबिटिज, दमा इत्यादि के रोगियों की देखभाल की जा सकती है अगर बॉडी सेंसरों से रोगी के बारे में लगातार सूचना मिलती रहे। रोगी के डाटा को हर स्तर पर गुप्त रखा जाना चाहिए। मार्केट डाईनेमिक रिपोर्ट के अनुसार 2012 तक विश्व में 25 सौ करोड़ डालर हर साल बचाए जा सकते हैं जो कि अस्पताल में भर्ती करके ईलाज कराने व वृद्धों की देखभाल करने में खर्च हो रहें हैं।

च) आर. एफ. रिमोट कंट्रोल

घर में जितने उपकरण होते हैं उतने ही रिमोट कंट्रोल रखने पड़ते हैं। टी.वी., डी.वी.डी., ए.सी., लाईट व पंखों को कंट्रोल करने के अलग–अलग रिमोट कंट्रोल रखने पड़ते हैं और वह भी सारे इन्फ्रारेड संचार पद्धति पर काम करते हैं। इसके अलावा यह सीधे उपकरण की ओर इंगित करने (लाइन ऑफ साईट) पर ही काम करता है। उपकरणों को नियंत्रित करने के लिए एक ही घर में 5 से 10 रिमोट कंट्रोल मिल जाएंगे। इनमें अंतरबदल भी नहीं होता न ही दूसरे उपकरणों के काम में आते हैं। यहां तक कि रिमोट कंट्रोल के स्टेण्डर्ड भी एक से नहीं हैं। यहां आर.एफ. रिमोट कंट्रोल में जिग्बी नेटवर्क को काम में लेते हुए घर के उपरोक्त सभी उपरकणों को एक रिमोट कंट्रोल से एक जगह बैठे हुए कंट्रोल किया जा सकता है। इस रिमोट कंट्रोल के लिए आर.एफ.4सी.ई (RF4CE) के नाम से स्टेन्डर्ड बन कर तैयार हो रहे हैं।

४. निष्कर्ष

ऑटोमेशन जिग्बी का बज्ज (Buzz) वर्ड है। जिग्बी घर के उपकरणों, कॉरपोरेट भवनों, उद्योगों को आटोमेट कर सकती है। जिग्बी नेटवर्क की फिजीकल लेयर में डाइरेक्ट सिक्वेन्स स्प्रेड स्पेक्ट्रम तकनीक व मेक लेयर में सी.एस.एम.ए./सी.ए. तकनीक काम में लेने, 128-bit सुरक्षा देने, व मेश नेटवर्क को अपनाने से जिग्बी नेटवर्क की विश्वसनीयता एवं गुणवत्ता की मात्रा खूब बढ़ जाती है। जिग्बी प्रोटोकॉल को 32 कि.बाईट की मेमोरी चाहिए जो कि बाकि वायरलेस तकनीकों की मैमरी की तुलना में एक तिहाई है। सेंसर नोड के लिए तो सिर्फ 4 कि. बाईट की मेमोरी से ही काम चल सकता है। जिग्बी आने वाले दिनों में इन्फोरमेशन, कम्प्यूटर व संचार व्यवस्था (ICT) में जबरदस्त क्रांति लाने वाली है।

आभार

लेखक डॉ. जार्ज वर्की, कार्यकारी निदेशक सी–डैक, नोएडा का आभारी है जिन्होंने यह लेख लिखने के लिए प्रेरित किया व समय–समय पर मार्गदर्शन दिया। लेखक श्री जे. सी. सेठी, हिन्दी अधिकारी को धन्यवाद देना चाहता हैं जिन्होंने इस लेख को एडिट करके छपने लायक बनाया।

– डॉ. प्रेम चन्द्र जैन
प्रोफेसर, स्कूल ऑफ इलेक्ट्रॉनिक्स

+++

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है।

हिन्दी भारत संघ की राजभाषा है।

हिन्दी भारत की सामाजिक संस्कृति की वाहिका है।

ई-लर्निंग और सी-डैक नोएडा का योगदान

प्रस्तावना

सूचना प्रौद्योगिकी के युग में ई–लर्निंग एक ऐसी शिक्षा का समर्थन करती है जिसका संचालन कम्प्यूटर तकनीक की सहायता से होता है और जिसमें विशेष रूप से डिजिटल प्रौद्योगिकी शामिल होती है। ई–लर्निंग को "तकनीक द्वारा सशक्त डिजिटल शिक्षण" के रूप में परिभाषित किया गया है। प्रायः कुछ परिस्थितियों में आमने–सामने बातचीत सम्भव नहीं होती उस संदर्भ में ई–लर्निंग् एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

संयुक्त राज्य अमरिका में ई–लर्निंग को एक योजनात्मक शिक्षण के रूप में परिभाषित किया गया है जिसे शिक्षार्थियों तक पहुँचाने के लिए मुख्य रूप से इंटरनेट या कम्प्यूटर आधारित प्रौद्योगिकियों के एक व्यापक स्पेक्ट्रम का उपयोग किया गया है।

रूढ़िवादी अनुमान के अनुसार पूरे जगत में ई–लर्निंग कम्पनियों की कीमत 38 अरब यूरो आंकी गई है और ई–लर्निंग के कुल उत्पादों का 20% योगदान यूरोपीय संघ देशों से है।

इंटरनेट और मल्टीमीडिया प्रौद्योगिकियों का विकास ई–लर्निंग की बुनियादी जरूरतों को पूरा करता है।

ई-लर्निंग का विकास

एक सर्वेक्षण के आधार पर देखा गया कि सन 2006 में संयुक्त राज्य अमरिका के उच्च शिक्षा संस्थानों में लगभग 3.5 लाख छात्र ऑन लाइन अध्ययन में भाग ले चुके थे।

महत्त्वपूर्ण बात यह है कि उपरोक्त् उच्च शिक्षा संस्थानों में गैर लाभ संस्थानों की तुलना में लाभ संस्थानों की संख्या ज्यादा है और रिपोर्ट के आधार पर यह भी पाया गया कि ई–लर्निंग के माध्यम को चुनने वाले छात्रों की संख्या परंपरागत माध्यम से ज्यादा थी।

निजी संस्थाएँ इस दिशा में अधिक से अधिक शामिल हो रही हैं क्योंकि इस प्रणाली में कम लागत पर ज्यादा उत्पादन हो रहा है एवं ऑनलाइन शिक्षा तेजी से बढ़ रही है। ऑनलाइन डॉक्टरल कार्यक्रम भी अग्रणी अनुसंधान विश्वविद्यालयों में विकसित किया जा रहा है।

ई-लर्निंग के लक्ष्य

ई–लर्निंग आमतौर पर छात्रों को जानकारी के माध्यम से मार्गदर्शन करने के लिए या छात्रों को विशिष्ट कार्यों के प्रदर्शन में मदद करने के लिए डिजाइन की गई है। सूचना आधारित ई–लर्निंग छात्रों को बहुत सारे विषयों की जानकारी देती है।

ई-लर्निंग के प्रकार

ई–लर्निंग व्यापक तौर पर 3 प्रकार की होती है:

कम्प्यूटर आधारित ज्ञान

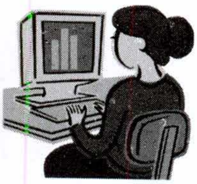

कम्प्यूटर आधारित ज्ञान को संक्षेप में सीबीयल कहा जाता है। इसका उल्लेख कम्प्यूटर के उपयोग के साथ शैक्षिक वातावरण के एक प्रमुख घटक के रूप में किया जाता है। हालांकि इसके अंतर्गत कक्षा में कम्प्यूटर का प्रयोग करने का उल्लेख किया जाता है जिसमें कम्प्यूटर का उपयोग शिक्षण उद्देश्यों के लिए किया जाता है। यह एक संरचित पर्यावरण को दर्शाता है।

कम्प्यूटर आधारित प्रशिक्षण

कम्प्यूटर आधारित प्रशिक्षण को संक्षेप मे सीबीटी कहा जाता है। सीबीटी की सहायता से छात्र अपने व्यवसाय से संबंधित विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम को सीख सकते हैं। सीबीटी विशेष रूप से कम्प्यूटर अनुप्रयोग के उपयोग पर जोर देता है। ऐतिहासिक तौर पर, सीबीटी के विकास में बाधाएं उत्पन्न हो गई हैं जिसका कारण विशाल संसाधनों की जरूरतें हैं। जैसे– एक सीबीटी कार्यक्रम बनाने के लिए मानव संसाधन और इसे चलाने के लिए हार्डवेयर संसाधन की आवश्यकता होती है।

हालांकि, पीसी कंप्यूटिंग शक्ति में वृद्धि और सीडी रोम से सुसज्जित कम्प्यूटर की विशेष रूप से बढ़ती व्यापकता कंपनियों और व्यक्तियों के लिए सीबीटी अधिक व्यावहारिक विकल्प बना रही है।

वेब आधारित प्रशिक्षण

सीबीटी के समान ही एक और प्रशिक्षण का ब्यापक स्तर पर उपयोग हो रहा है जिसे वेब आधारित प्रशिक्षण कहा जाता है। इंटरनेट पर वेब ब्राउज़र का उपयोग होता है। वेब आधारित प्रशिक्षण में प्रायः इंटरैक्टिव तरीकों जैसे बुलेटिन, बोर्ड, चैट त्वरित संदेश, चर्चा सूत्र सुविधाएं शामिल हैं। यह कम्पनियों के अपने निजी इंटरानेट पर भी काम करता है।

वेब आधारित प्रशिक्षण

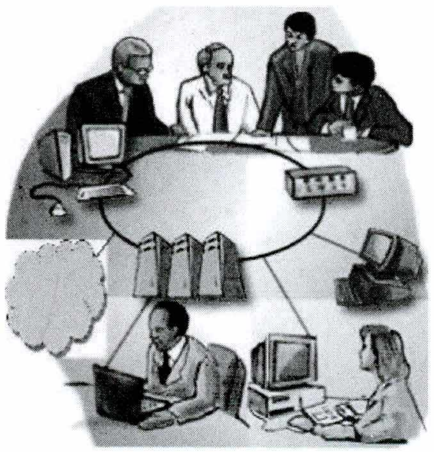

शैक्षणिक तत्व

शैक्षणिक तत्वों को संरचनाओं या शैक्षिक सामग्री की इकाइयों के प्रयास के रूप मे परिभाषित किया जा सकता है। उदाहरण के लिए यह एक सबक, एक काम, एक बहु विकल्प सवाल, एक प्रश्नोत्तरी, एक चर्चा समूह या एक मामले का अध्ययन हो सकता है।

शिक्षण सामग्री तैयार करते समय ही शैक्षणिक दृष्टिकोण का मूल्यांकन कर लेना चाहिए। सरल शैक्षणिक दृष्टिकोण से सामग्री बनाने में आसानी होती है लेकिन इससे कार्यशीलता की गुणवत्ता कम हो जाती है। दूसरी ओर जटिल शैक्षणिक दृष्टिकोण की स्थापना मुश्किल होती है और इसके विकास की दर भी धीमी होती है यद्यपि यह छात्रों को अधिक महत्वपूर्ण अनुभव प्रदान करता है। कहीं इन चरम सीमाओं के बीच एक आदर्श शिक्षण का उद्भव होता है जो छात्रों को शैक्षिक अनुभव प्रदान करता है और एक शिक्षक को प्रभावी ढंग से शिक्षण सामग्री का निर्माण करने की युक्ति प्रदान करता है।

शैक्षणिक दृष्टिकोण

ई–लर्निंग के लिए विभिन्न शैक्षणिक दृष्टिकोणों का उपयोग संभव है:

- अनुदेशात्मक डिजाइन दृष्टि: यह एक केंद्रीकृत शिक्षित समूह या एक शिक्षक द्वारा विकसित की जाती है।
- रचनावादी दृष्टि: यह विशेष रूप से चर्चा मंचों, ब्लॉग्स, सहयोगी गतिविधियों द्वारा तैयार की जाती है।

संचार प्रौद्योगिकियों में प्रयुक्त ई-लर्निंग

संचार प्रौद्योगिकियों को आमतौर पर अतुल्यकालिक और तुल्यकालिक के रूप में वर्गीकृत कर सकते हैं। अतुल्यकालिक गतिविधियों में ब्लॉगों, चर्चा बोर्डों तकनीकों का उपयोग किया जाता है। अतुल्यकालिक गतिविधियों में प्रतिभागी एक ही समय में अन्य प्रतिभागियों की भागीदारी की निर्भरता के बिना विचारों या सूचनाओं का आदान–प्रदान करता है। तुल्यकालिक गतिविधियों में एक ही अवधि के दौरान एक या अधिक प्रतिभागियों के साथ विचारों और

जानकारियों का आदान–प्रदान शामिल है। आमने–सामने चर्चा करते हुए दो चेहरे तुल्यकालिक संचार का एक उदाहरण हैं। तुल्यकालिक गतिविधियों में सभी प्रतिभागी एक बार एक ऑनलाइन चैट सत्र या एक आभासी कक्षा या बैठक रूप से शामिल होते हैं। आभासी कक्षाओं और बैठकों में अक्सर संचार प्रौद्योगिकियों के मिश्रण का उपयोग किया जा सकता है।

ई–लर्निंग बनाम परंपरागत कक्षा अध्ययन् का लाभ

ई–लर्निंग,संगठनों और व्यक्तियों को बड़े लाभ प्रदान कर सकती है:

1. कम लागत में प्रशिक्षण : यह लोगों को यात्रा से बचने, कागज के उपयोग को कुछ कम करने की सुविधा उपलब्ध कराता है।

2. किफायती गुणवत्ता शिक्षा :

यह उच्च क्षमता वाले प्रशिक्षकों को दूरियों से परे होकर अपना ज्ञान साझा करने की युक्ति प्रदान करती है। छात्रों को शारीरिक, राजनीतिक और आर्थिक सीमाओं से परे पाठ्यक्रम में भाग लेने के अवसर प्रदान करती है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त विशेषज्ञों की जानकारी किसी को भी कम से कम कीमत पर उपलब्ध कराती है। यह काफी हद तक उच्च शिक्षा की लागत को कम कर इसे और अधिक किफायती और जनता के लिए सुलभ बनाती है।

3. सुविधा और शिक्षार्थियों के लिए लचीलापन :

ई–लर्निंग स्वतः उपयोग के लिए 24x7 उपलब्ध होती हैं। यह शिक्षार्थियों को एक विशेष दिन के लिए या किसी विशेष समय के लिए या शारीरिक रूप से कक्षाओं में भाग लेने के लिए बाध्य नहीं करती है। वे अपनी सुविधानुसार सत्र की पढ़ाई को रोक सकते हैं।

ई-लर्निंग में प्रयुक्त उपकरण:

ई–लर्निंग मे अनेक प्रकार के सॉफ्टवेअर उपकरणों का उपयोग होता है। जैसे लर्निंग मैनेजमैंट सिस्टम, सम्पादन उपकरण (आथरिंग टूल्स), वाइस रिकार्डिंग उपकरण, मल्टीमीडिया एनिमेशन उपकरण आदि। बहुत सारी कम्पनिया ई–लर्निंग के साफ्टवेयर का उत्पादन करती हैं। जैसे–आर्टीकुलेट, अडोब, ई–लीप, संख्या आदि। बहुत सारे ई–लर्निंग साफ्टवेयर इंटरनेट पर मुफ्त भी मिल सकते हैं। उदाहरण के लिए मूडल, बृहस्पति इत्यादि।

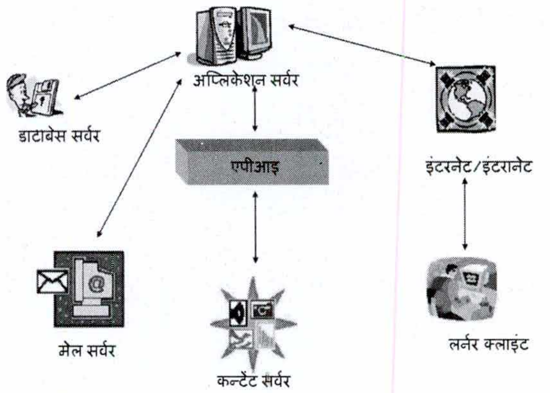

ई-लर्निंग में सी-डैक नोएडा का योगदान

सी–डैक नोएडा में ई–लर्निंग की शुरुआत ई–शिक्षा प्रोग्राम के रूप में हुई। आज सी–डैक नोएडा के बहुत से प्रोग्राम ई–लर्निंग की सहायता से चलाए जा रहे हैं। सी–डैक नोएडा भारत सरकार के संचार और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, सूचना प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा प्रायोजित परियोजना "डिजाइन एण्ड डवलपमेंट ऑफ ई–लर्निंग कन्टेंटस फार ई–सेक्योरिटी सोलुशन डेवेलपरस" के अंतर्गत ई–सेक्यूरिटी प्रोग्राम 3 स्तरों पर चला रहा है। पहला स्तर छात्रों के लिए, दूसरा संगणक प्रशासकों/सुरक्षा अधिकारियों या कर्मचारियों के लिए और तीसरा स्तर बैज्ञानिकों के लिए है।

अत्यन्त महत्वपपूर्ण बात यह है कि यह कोर्स इंटरनेट पर मुफ्त उपलब्ध है जो कि सी–डैक नोएडा की निम्नलिखित साईट पर देखा जा सकता है:

http://www.cdacnoida.in/elearning/elearninghome.htm

इस प्रोग्राम का उपयोग करने के लिए यूजर को पहले उपरोक्त साईट पर जाकर अपनी जरूरत का प्रोग्राम चुनना चाहिए फिर एक नया पन्ना खुलेगा उस पर यूजर को नामांकन करना चाहिए।

नामांकन करते समय ई–मेल को अच्छी तरह जांच लेना चाहिए क्योंकि इसी ई–मेल पर उन्हें यूजर आईडी और पासवर्ड भेजा जाता है।

जब उन्हें यूजर आईडी और पासवर्ड मिल जाए तब उन्हें निम्नलिखित साईट खोल कर लागिन करना चाहिए और कोर्स पढ़ना शुरु कर देना चाहिए। साईट इस प्रकार है:–
http://eshiksha.cdacnoida.in/

उपसंहार

हम सभी को ज्ञात हो गया कि ई–लर्निंग के बहुत से लाभ हैं। सी–डैक नोएडा भविष्य में और भी ई–लर्निंग पर परियोजना शुरू करने के बारे में विचार कर रहा है ताकि ज्यादा से ज्यादा लोगों को कम लागत में उच्च गुणवत्ता की शिक्षा प्रदान की जा सके।

– संतोष कुमार
परियोजना अभियंता, फिनिशिंग स्कूल
– लक्ष्मी कल्याणी
वरिष्ठ परियोजना अभियंता, फिनिशिंग स्कूल
– वी.के.शर्मा
वरिष्ठ परियोजना प्रबन्धक, फिनिशिंग स्कूल

+++

बिछड़ गए बचपन के साथी

बिछड़ गये बचपन के साथी
छूट गयी वह माटी
जिसने इतना बड़ा किया,
बिछड़ गयी वह मां भी,
कहते हैं कुछ पाने के लिए कुछ खोना है पड़ता,
बाद में हंसना जो तुम चाहो,
पहले रोना है पड़ता,
मां, साथी और गांव की माटी हर पल तुझे बुलाए
खूब पढ़े तु सब बढ़े तु पर भूल न उनको जाए,
बिछड़ गये बचपन के साथी

– रत्नेश कुमार सिंह
बी–लेवल कोर्स

+++

पत्थर कहते हैं

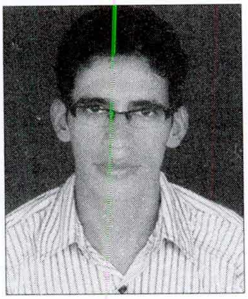

ये न समझिये कि पत्थर होते हैं बेजुबान।
वो भी सब कुछ कहते हैं अपनी जुबां से।।

ग्रीष्म की तपन, शीत की कंपन विदीर्ण करता है,
अकेतन को भी निहार कर इन्द्रधनुषी आभा नभमण्डल में गुनगुनाते हैं,
वो भी अपनी जुबां से।।

नवअट्टालिकाओं की सुंदर छज्जों पर सजने की चाहत उसकी नहीं होती।
वो तो बस दे देते हैं, मौन स्वीकृति, नींव में दफन होने की अपनी जुबां से।।

वक्त के हथौड़ों से छलनी होता है मन उसका भी बार–बार।
फिर भी भूल कर दर्द अपना, मुस्कुरा देते हैं, अपनी जुबां से।।

टकरा कर किसी अजनबी से लहू बहता है, उनका भी।
हम बेदर्द हो गये हैं, वरना सिसकते हैं वो भी अपनी जुबां से।।

पत्थर नहीं हम पत्थर दिल हो गये हैं कि बना कर शीशे का घर।
उछाल देते हैं दूसरे पर और कहते हैं, बेजुवां होते हैं पत्थर अपनी जुबां से।

– शंकर दत्त
बी–लेवल कोर्स

+++

हिन्दी का पौधा दक्षिणवालों ने त्याग से सींचा है।
शंकरराव कप्पकेरा

ग्रेफीन से बनेगी चिप

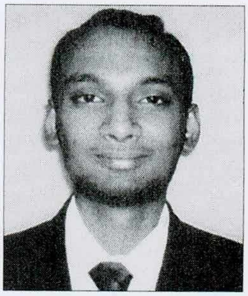

वैज्ञानिकों ने कार्बन के एक अपरूप ग्रेफीन की खोज की है जो आने वाले वक्त में कंप्यूटर चिप बनाने में सिलिकॉन का स्थान ले सकता है। ग्रेफीन की टू–डाइमेंशनल आकृति के कारण सिलिकॉन की तुलना में इससे छोटी चिप बनाई जा सकती है।

ग्रेफीन क्या हैं ग्रेफीन के गुण

ग्रेफीन का मुख्य गुण यह है कि इसमें इलेक्ट्रॉन प्रवाह सिलिकॉन की तुलना में बेहतर है। यह टू–डाइमेंशनल तत्व है इसलिए छोटे चिप बनाए जा सकते हैं। इसके अलावा इसमें इलेक्ट्रिसिटी को नियंत्रित करना आसान होता है। पतली, पारदर्शी, अधिक चालकता वाली और मजबूत होने के कारण इसे कई कार्यो के लिए बेहतर तत्व माना जाता है। वैज्ञानिकों ने अभी इस पर कार्य करना शुरू ही किया है और इसकी चिप बाज़ार में आने में समय लगेगा।

– हर्ष सक्सेना
मैनेजमेंट ट्रेनी, गुणवत्ता सुधार प्रयोगशाला

+++

धैर्य एक कड़वे पौधे की तरह होता है लेकिन इससे मिलने वाला फल बहुत मीठा होता है।

....

स्वस्थ शरीर ही मनुष्य के लिए सर्वोत्तम सुख है तथा शरीर और मन दोनों से स्वस्थ व्यक्ति ही मानव जीवन का सुख भोग सकता है। व्यायाम और योग क्रियाओं द्वारा शरीर और मन दोनों स्वस्थ रखा जा सकता है।

....

स्वयं का गुरू बनकर स्वयं को उपदेश देने वाला व्यक्ति लक्ष्य प्राप्त कर लेता है।

....

अपने विचारों की अभिव्यक्ति मनुष्य का स्वाभाविक गुण है। यह साहित्य की किसी भी विधा, अर्थात् कहानी, कविता, लेख अथवा व्यंग्य द्वारा अपने भावों व मनोभावों को प्रकट करके की जा सकती है और हमारी हिन्दी सभी किस्म की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है तथा इसके अपनत्व को अनुभव किया जा सकता है। हिन्दी भारत की सामाजिक संस्कृति की वाहिका है।

....

प्रकृति की पुकार

कभी सोचती हूँ प्रकृति हमें कितना देती है,
खुशियों से हमारा दामन भर देती है,
लेकिन हम कहां उसकी सुरक्षा को सोचते हैं,
अपने हाथों से ही अपनी जड़ खोदते हैं।।

मैनें माना कि युग परिर्वतन का है,
पर यह विषय भी गंभीर चिंतन का है,
पौधे कट रहे हैं, नदियां सूख रही हैं,
हाल बुरा मानव जीवन का है,
फिर भी वह हमारी जीवन नैया खेती है।।

कभी सोचती हूँ प्रकृति हमें कितना देती है,
खुशियों से हमारा दामन भर देती है।।

क्यों टूट रहा पल–पल जीवन आधार,
क्यों नही सुन रहा मनुष्य आहत प्रकृति की पुकार,
क्यों लोप हो गया पृथ्वी से वो मानव सदाचार,
फिर भी वो सारे कष्ट सह लेती है।।

कभी सोचती हूँ प्रकृति हमें कितना देती है,
खुशियों से हमारा दामन भर देती है।।

कुछ कहते हैं ये फूल भी, संदेश बनतें है राहों के धूल भी,
नहीं भूलना है हमें अपना अतीत,
हमें समझना है प्रकृति का मूक संगीत,
क्योंकि वो कण–कण में सुगंध अपना विखेर देती है।।

कभी सोचती हूँ प्रकृति हमें कितना देती है,
खुशियों से हमारा दामन भर देती है।।

सुनो–सुनो ये पृथ्वीवासी क्या बुरा है होना परोपकारी,
अंर्तनाद स्वर में प्रकृति पुकारी,
क्या यही है मेरी लाचारी,
फिर भी वो गंगा बनकर पापियों के पाप धोती है।।

कभी सोचती हूँ प्रकृति हमें कितना देती है,
खुशियों से हमारा दामन भर देती है।।

– निशा पाण्डेय
फैकल्टी, फिनिशिंग स्कूल

+++

संस्थान में पर्यावरण के लिए हमारा कर्त्तव्य

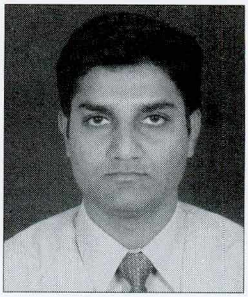

आज हमारे देश में बिजली की समस्या बहुत विकराल रूप ले चुकी है जिसके लिये हम सब भी जाने अनजाने में कहीं न कहीं जिम्मेदार हैं। इस समस्या को कम करने के लिए थोड़े से बचाव से कम कर सकते हैं :–

1. हमें कम ऊर्जा वाले उपकरणों का उपयोग करन चाहिए।
2. अपने स्थल की लाइट एवं पखों का उपयोग तभी करें जब जरूरत हो। यदि आप बाहर जा रहे हैं तो लाइट व पंखे को बंद करके जाएं।
3. दिन में सूर्य के प्रकाश का उपयोग करें।

आज देश ही नहीं दुनिया में पानी की समस्या हर स्थान पर है। पीने के लिए स्वच्छ जल पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं है। इस समस्या को हम कुछ हद तक कम कर सकते हैं :–

1. पानी को बरबाद नहीं करना चाहिए, यदि बगैर उपयोग के पानी बह रहा है तो नल को बंद करना चाहिए।
2. टायलेट का फ्लश इस तरीके से होना चाहिए की कम पानी का उपयोग हो।
3. उपयोग किया हुआ पानी री साईकिल के द्वारा बागवानी में उपयोग करना चाहिए।
4. वर्षा का पानी सबसे शुद्ध होता है। इसे रेन वाटर हारवेस्टिग के द्वारा जमीन में डालना चाहिये। इससे भूगर्भ का जल स्तर स्थिर रहेगा और हमें सालों साल जल प्राप्त हो सकता है।

आज हरित धरती कम होती जा रही है इसके लिए हम भी जिम्मेदार हैं। आज हम लोग कागज का बहुत ज्यादा उपयोग करने लगे हैं। इस कम्प्यूटर के युग में भी हम पुराने तरीके से ही काम कर रहे हैं और प्रतिदिन हजारों, लाखों वृक्ष कटते जा रहे हैं। इसको हम कम कर सकते है:–

1. कागज का कम से कम उपयोग करना चाहिए।
2. अति आवश्यक हो तभी प्रिंट आउट लेना चाहिए, प्रिंटर दोनों तरफ से उपयोग करने वाला होना चाहिए।
3. उपयोग किए कागज को जलाने की बजाय उसे अनुपयोगी बनाकर रीसाइकिल कर उपयोग लायक बनाना चाहिए।

अगर हमें अपना और अपनी आने वाली पीढ़ी को स्वच्छ वातावरण देना है तो अधिक से अधिक वृक्ष लगाना चाहिए और वृक्षों को कटने से बचाना चाहिए।

आओ आज हम शपथ लेते हैं कि अपने काम के साथ–साथ स्चच्छ वातावरण के लिए हम ये कदम बढायेंगे।

स्चच्छ वातावरण

हमारा

भविष्य।

– अमित गुप्ता
ई.आर.पी. कंसल्टेंट, स्कूल ऑफ मैनेजमेंट

+++

हिन्दी स्वतंत्रता आंदोलन की भाषा रही है।

हिन्दी सरल, सुबोध और व्याकरण सम्मत भाषा है।

हिन्दी जनसाधारण की भाषा है।

कवि के भाव का आदर करता हूँ

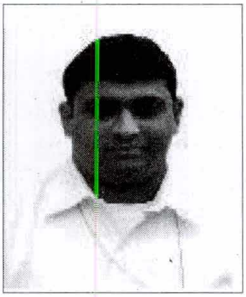

मैं कवि नहीं हूँ, कविता लिखना आदत नहीं है।
फिर भी कवि के भाव का आदर करता हूँ।।

कवि की जन्म–भूमि कविता है।
कवि की सोच सूरज की किरणें हैं।
कवि का अन्त भी कविता है।
इसलिए मैं, कवि के भाव का आदर करता हूँ।।

दुनिया बदलती है, अपने ही समय पर
कवि की भवना, समय ही कहता है।
समय ही कवि की, कविता का विश्लेषण बताता है।
इसलिए मैं, कवि के भाव का आदर करता हूँ।।

सूचना पद्धति बदली, दुनिया की राजनीति बदली।
और बदली दुनिया की सोच।
फिर भी कवि अटल है, कविता के भाव पर।
और कवि की कविता का भाव नहीं बदला।
इसलिए मैं, कवि के भाव का आदर करता हूँ।।

हम तो ऑनलाइन और ऑफलाइन की दुनिया जीते हैं।
समय नहीं है, कविता लिखने का
फिर भी कवि की आदत है मुझमें, इसलिए कविता लिखता हूँ।
और इसलिए, मैं कवि के भाव का आदर करता हूँ।।

समय ही कवि बनने की इच्छा जागृत करता है।
और कविता की पंक्तियां झरने की तरह बहती हैं।
समय ही कवि के भाव का आदर करता है।
इसलिए, मैं कवि के भाव का आदर करता हूँ।।

दुनिया चलती है, कम्प्यूटर की कमांड पर।
मगर कवि की कविता चलती है, उसकी ही पंक्तियों पर।
जो दरशाती है कवि के भाव को
इसलिए, मैं कवि के भाव का आदर करता हूँ।।

किसान समय बिताता है खेत पर, फसल उगाने के लिए।
फिर भी कवि, कविताओं में उलझ कर रहता है।
जिसकी भावनाओं की लोग कदर नहीं करते हैं।
फिर भी मैं, कवि के भाव का आदर करता हूँ।।

दुनियां अभी भी व्यस्त है, दुनियां के रंगीन चैनल पर।
जहां पर जीवन का कोई भाव व्यक्त नहीं होता है।
अस्तित्व का रूझान समझ में नहीं आता है।
फिर भी कवि अस्तित्व समझाता है, कविता की पंक्तियों से।
इसलिए, मैं कवि के भाव का आदर करता हूँ।।

आज की दुनिया ज्योतिषों के विश्लेषण पर भरोसा करती है।
कवि के विश्लेषण को हीनता से देखती है।
फिर भी कवि कविता लिखता है।
क्योंकि मैं, कवि के भाव का आदर करता हूँ।।

समय के साथ चलना ही, कवि की कविता कहती है।
फिर भी इंसान भटकता है।
और की वे विश्लेषण के साथ वापस आता है।
इसलिए, मैं कवि के भाव का आदर करता हूँ।।

— पार्थ. पी. चट्टाराज
वैज्ञानिक अधिकारी, एच.आई.एस.

केरल दर्शन

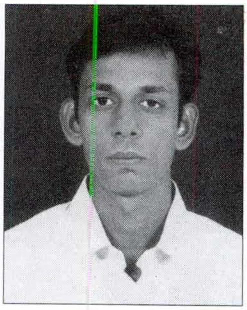

और रिजल्ट आ चुका था। ऑल इंडिया स्तर पर 1485वां रैंक आया था। कुछ अंक ऐसे होते हैं जो दिल को इतने करीब होते हैं कि भूलाए नहीं भूलते। यह भी मेरे लिए कुछ ऐसा ही अंक था।

मैंने कोचीन यूनिवर्सिटी, केरल की राष्ट्रीय प्रवेश परीक्षा में लगभग 1 लाख उम्मीदवारों में 1485वां स्थान प्राप्त किया था। हालांकि मैं दो वर्षों से आई.आई.टी. की तैयारी कर रहा था किंतु दोनों बार प्रारंभिक परीक्षा उर्त्तीण होने के बावजूद मुख्य परीक्षा में मुझे निराशा ही हाथ लगी थी। घर जा कर ध्यान से प्रॉस्पैक्टस देखा और वह पहली पंक्ति जिसने मुझे आकर्षित किया वो थी केरल ईश्वर का अपना देश (Kerala Gods Own Country) बचपन से ही मुझे प्रकृति की गोद में खेलना बहुत पसंद था। वास्तव में मेरा गांव भी पहाड़, जंगल, नदी और कई प्राकृतिक सुंदरता से घिरे हुए किसी पर्यटक स्थान से कम नहीं है। प्रॉस्पैक्टस पर दृष्टि डालने पर मेरे अंदर केरल के बारे में जानने की जिज्ञासा और बढ़ गई। मैंने कई प्रकार से वहां के बारे में जानकारी लेने की कोशिश की। जितनी जानकारी मुझे वहां के बारे में मिल रही थी, मेरे अंदर की जिज्ञासा और उत्तेजना उतनी ही बढ़ती जा रही थी। संपूर्ण भारत में शिक्षा के क्षेत्र में सबसे आगे केरल, अपने घने जंगल, बैक वॉटर, समुद्र तट भारतीय मसालों व सूखे फलों की पैदावार के लिए काफी मशहूर है।

अंततः वह समय आ गया, जब मेरी ट्रेन (एलेप्पी एक्सप्रेस) धनबाद से कोचीन के लिए प्रस्थान करने वाली थी। मेरे पास माँ की दी हुई मिठाइयाँ और नमकीन से भरा हुआ एक बैग था। वह मेरे लिए बहुत चिंतित थी, क्योंकि मैं पहली बार इतनी लंबी यात्राा (52 घंटे) के लिए घर से रवाना हो रहा था। इसलिए वह मुझे बहुत सी सलाह दे रही थी जैसे अनजानों से ज्यादा बातें मत करना, उनका दिया कुछ मत खाना इत्यादि।

तो मेरी ट्रेन प्रस्थान कर चुकी थी। मैंने सिडनी सेल्डन का नोवेल निकाला और पढ़ना शुरू किया। समय के साथ ट्रेन आगे बढ़ी जा रही थी और मेरा मन नई यूनिवर्सिटी, नए दोस्तों के बारे में सोचकर रोमांचित हो रहा था। दक्षिण भारत की तरफ यह मेरा पहला गमन था। यहां की सभ्यता–संस्कृति उत्तर भारत से पूरी तरह नहीं तो बहुत हद तक भिन्न है। और क्योंकि मुझे हमेशा से नई सभ्यता, नए लोगों को समझने की जिज्ञासा लगी रहती है इसलिए मैंने पहले ही योजना बना रखी थी कि यदि आई.आई.टी. की प्रवेश परीक्षा में सफल हुआ तो आई.आई.टी. चेन्नई में ही नामांकन कराऊँगा। तो मेरी ट्रेन आई.आई.टी. चेन्नई नहीं बल्कि कोचीन यूनिवर्सिटी की ओर 80–100 कि.मी. घंटे की रफ्तार से बढ़ी जा रही थी। जैसे–जैसे हम उत्तर भारत से दूर हो रहे थे, ट्रेन के हॉकर भी अलग होते जा रहे थे। झालमूढ़ी, चनाचूर, मुंगफली की जगह अब इडली, डोसा और बड़े ने ली ली थी। एक और बात पर मैंने गौर किया था कि जहां उत्तर भारत के स्टेशन खाने के लिए पूरी–सब्जी में सिमट कर रह जाते हैं, दक्षिण भारत के स्टेशन मे खाने की चीजों में काफी विविधता थी। इडली–डोसा से लेकर बिरयानी, फ्राइड राइस, गर्म दूध इत्यादि। सभी कुछ साफ–सुथरे स्टॉल में उपलब्ध होते थे। देखते–देखते अब हम रांची, राउरकेला, जियवाड़ा, विशाखापत्तनम, चेन्नई, कोयंबतुर होते हुए केरल की गोद में कदम रखने वाले थे। ट्रेन अपनी ही लय से ऊंटी की पहाड़ों को चिरते हुए केरल की ओर दौड़ी चली जा रही थी और मैं ऊँटी के पहाड़ों के अद्भूत नजारों में खोता चला जा रहा था। आंध्र, तमिलनाडु की उमस वाली गर्मी की थकान प्रकृति की बनाई सुंदर कलाकृतियों को देखकर दूर होती जा रही थी।

फिर देखते ही देखते केरल आ गया। जहाँ के सारे स्टेशन अपने आप में मॉडल स्टेशन थे। इतने साफ सुथरे कि एक मक्खी भी नहीं दिखती। कम आबादी और अधिकतम शिक्षा दर का प्रभाव वहाँ के स्टेशनों में दिख रहा था। मेरे साथ मेरे नए दोस्त भी केरल की हरियाली और सुदंरता से काफी प्रभावित थे, पर मैं इसके साथ–साथ किसी और चीज से भी काफी प्रभावित था और वो थे वहां के लोग। मैंने लगभग सारे भारत को देखा है, परन्तु यहां जैसे मिलनसार और

सरल लोग और कहीं देखने को नहीं मिले। आप यहां किसी भी छोटे से छोटे रेस्तरां या होटल में खाना खाने जाइए, काउंटर पर बैठा व्यक्ति कम से कम एक बार पैसे लेते वक्त, आपकी ओर मुस्कुरा के जरूर देखेगा। भारत में अतिथि को देवता कहते हैं और अगर कहीं इसका पालन होता है तो वह है केरल। इसलिए केरल में सबसे अधिक पर्यटक भी आते हैं। यहां की सुंदरता है ही पर यहां के लोग इसे और भी सुदंर बना देते हैं।

देखते ही देखते कोचीन आ गया और मैंने भारत के एक कोने में बसे छोटे से राज्य के सुंदर हरे–भरे प्राकृतिक वातावरण में स्थित यूनिवर्सिटी में अध्ययन करना शुरू कर दिया। जहां मेरे उत्तर भारतीय दोस्तों को नए माहौल में ढलने में परेशानी हो रही थी। मैं उतनी ही खुशी और रोमांच से सारा कुछ देख और समझ रहा था। बचपन में मेरा पसंदीदा सिरियल सुरभी डी.डी.1 पर आता था जिसमें पूरे भारत की सैर कराई जाती थी और नई चीजें रोचक तरीके से दिखाई जाती थी। केरल की इस तरह की सारी चीजें मेरी आंखों के सामने सजीव तैर रही थीं।

प्रकृति की सुदंरता और लोगों की सरलता के बीच हमारा पहला सिमेस्टर कब खत्म हो गया, पता ही नहीं चला। फिर हम 50–100 उत्तर भारतीय दिसंबर में छः महीने बाद अपने घर की ओर जा रहे थे। स्टेशन पर जब ट्रेन आती हुई देखी, पूरे शरीर में उत्साह की तरंग दौड़ गई जिसने मेरे गले को आवेशित कर दिया और मैं खुशी के मारे जोर से चिल्ला उठा। मुझे देख मेरे जोर से दोस्त भी चिल्ला उठे। इस शोर ने हम लोगों के महीने से यूनिवर्सिटी परीक्षा से थके शरीर को फिर से ऊर्जावान बना दिया। हम लोग लगभग 50–100 लोग एक साथ उसी ट्रेन में सवार हो गए। पूरी ट्रेन ही एक कैंपस में बदल गयी थी। कुछ इस बोगी में तो कुछ उस बोगी में। हम सारे लोग ट्रेन के इस छोर से उस छोर तक घूम–घूम कर मस्ती कर रहे थे। दिसंबर के महीने में भी दक्षिण भारत में तापमान 25°- 30° के बीच होता है। ट्रेन तेजी से तमिलनाडु,, आंध्र छोड़ते हुए हावड़ा की ओर बढ़ती जा रही थी और मैं घर पहुंचने के विचार से पुलकित होते हुए सोने की कोशिश कर रहा था। घर के विचारों में खोए हुए कब आंख लग गई पता ही नहीं चला। अचानक तड़के 4 बजे ठंड से नींद खुली, ट्रेन एक स्टेशन पर रूकी थी। बाहर आकर देखा तो लोग फुल स्वेटर पहने और कंबल ओढ़े हुए चाय पी रहे थे। हम लोग उड़िसा में थे। तापमान केरल के 30° से घटकर 10° पे आ गया था। मैं टी–शर्ट में ठिठुर रहा था। फिर अपनी बर्थ पर आकर कंबल ओढ़ के सोने की कोशिश करने लगा। गर्मी के 30° तापमान से एक दिन में ही 10°-15° आने का मजा ही कुछ और है जो केवल मैं और मेरे दोस्त ही सुबह–सुबह फुल स्वेटर पहने चाय की चुस्की लेते हुए महसूस कर रहे थे।

फिर देखते–देखते हावड़ा स्टेशन आ गया। हम सारे दोस्त विदा ले रहे थे यह कह कर कि 20 दिन बाद फिर मिलेंगे, भारत दर्शन का वह रोमांच एक साथ मिलकर फिर महसूस करेंगे।

– विकास कुमार
जूनियर रिसर्च फैलो, गुणवत्ता सुधार प्रयोगशाला

हिन्दी एक जीवंत भाषा है। इसमें बड़ी सुरम्यता और उदारता है।
–के. आर. नारायणन, भारत के पूर्व राश्ट्रपति

भाषा के जरिए ही हम एक आदर्श समाज की कल्पना कर सकते हैं।
–डॉ. मनमोहन सिंह, भारत के प्रधानमंत्री

आधुनिक भाषाओं के हार की मध्यमणि हिन्दी भारत भारती होकर विराजती रहे।
–गुरूदेव रवींद्रनाथ टैगोर

एक जबरदस्त हादसा

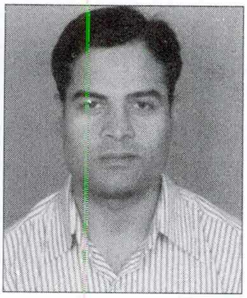

एक बार एक जबरदस्त हादसा हो गया,
एक महिला का पति खो गया।
परेशान होकर महिला अपनी सहेली के साथ थाने आई,
और थाने में रपट लिखवाई।

मेरा पति मनसुख लाल जो देखने में गोरा है, लम्बा, चौड़ा, तगड़ा व्यक्तित्व,
देखने में भी भोला है, चाल चलन भी नायाब है, हफ्ते भर से गायब है,
जो कोई ढूंढ कर लायेगा, उचित ईनाम पायेगा।

बाहर आकर सहेली महिला से बोली,
तूने अपने पति की रपट गलत क्युं लिखवाई,
तेरा पति तो मोटा, छोटा और सांवला है, देखने में भी बाबरा है,
तेरा रपट लिखवाना तो बेकार चला जायेगा,
इस तरह तो तेरा पति वापस नहीं मिल जायेगा।

मुस्कुरा कर महिला बोली, तुझको मालूम नहीं हकीकत क्या है,
तुझको मालूम नहीं हकीकत क्या है, पति को मिलने की जरूरत क्या है?
रपट लिखवाना तो एक बहाना है,
रपट लिखवाना तो एक बहाना है,
इसी बहाने एक नया पति पाना है।

– मुकुल कुमार
कॉन्ट्रेक्ट इंजीनियर, ई–गवर्नेंस

\+\+\+

हिन्दी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है।
– वी. कृश्णस्वामी अय्यर

राष्ट्रभाषा का प्रचार करना मैं राष्ट्रीयता का एक अंग मानता हूँ।
–डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

अगर हमें हिन्दुस्तान को एक राष्ट्र बनाना है तो राष्ट्रभाषा हिन्दी ही हो सकती है।
–महात्मा गांधी

प्रायश्चित

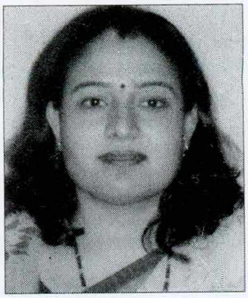

आज मैं अपने बचपन की सहेली गीता की बेटी की शादी करके लौट रही हूँ। मन बड़ा हल्का और खुश है। ट्रेन की गति के साथ पुराने दिनों की यादें मेरे मानस पटल पर चलचित्र की भांति आती जा रही हैं।

गीता आधुनिक विचारों वाले परिवार में पत्नी, पांच बहनों में सबसे छोटी थी जो राजस्थान के छोटे से गांव में, ससुराल में अंधविश्वासी व पुरानखंडी विचारों वाले सम्मिलित परिवार में रहती थी। उसका पति शहर में रहकर ही पढ़ा था और शहर में ही नौकरी करता था। वह गांव आता जाता रहता था।

गीता की जेठानी ने 3 पुत्रियों को जन्म दिया था। इसलिए, वह सास और दादी सास के व्यवहार से त्रस्त थी। ऐसे परिवार में गीता सुखी थी परन्तु भयभीत सी रहती थी।

उसकी दादी सास आए दिन अपने जमाने में बहुओं के साथ हुए दुर्व्यवहार की चर्चा अक्सर किसी न किसी बहाने करती रहती थी कि "हमारे ज़माने में बहुओं की उम्र 7–8 साल होती थी, बहुएं ही खाना बनाती एवं बर्तन साफ करती थीं। ज़रा सी गलती हो जाए तो चिमटे की मार और गालियों की बौछार होती थी। चाहे जाड़ों की ठिठुरती रातें हों, ससुरजी नौ बजे खाना खाते थे और सास दस बजे। जब तक वे खाना न खा लें, बहुएं रसोई से बाहर नहीं निकलती थीं और अगर रसोई में बैठे–बैठे झपकी लग जाए तो धरती आसमान एक कर दिया जाता था।"

एक दिन उसे पता चला की वह गर्भ से है। गर्भ जनित कष्टों को वह मूक हो कर झेलती रही। गर्भ में कन्या भ्रुण होने की आशंका से वह सिहर उठती। अतः उसने किसी को भी यह बात नहीं बतलायी। यहां तक अपने पति को भी नहीं। किन्तु एक दिन किसी तरह मुझे यह बात बतलाई और कहा कि मैं भी किसी से न बताऊँ जब तक कि उसके गर्भ में भ्रूण क्या है उसका पता नहीं चलता।

अचानक एक दिन वह मेरे घर किसी बहाने से आई। हम दोनों डॉक्टर के घर गए। वहां सोनोग्राफी से ज्ञात हुआ कि वह भ्रूण कन्या ही है। वह अत्यधिक चिंतित एवं परेशान हो गई। बहुत समझाने पर भी उसने गर्भपात करवा लिया। 4–5 दिन बाद वह वापस अपने ससुराल चली गई। इसी बीच उसके पति का स्थानांतरण गांव से बहुत दूर के शहर में हो गया। अतः वह पति के साथ रहने चली गई। शहर आ कर उसे बहुत बड़ा सुकून मिला। उसका पति बहुत नेक था। वह गीता से बहुत प्यार करता था। इस तरह पांच–छः वर्ष गुज़र गए। बाद में उसे ज्ञात हुआ कि

वह भविष्य में कभी मां नहीं बन सकेगी। उसके शरीर में मानों घुन सा लग गया। पति को बिना बताएं पाप उसे अंदर ही अंदर खाए जा रहा था। और अब तो वह बांझ भी थी। पति उसे हर हाल में खुश देखना चाहता था। अतः दोनों ने एक 3 माह का स्वस्थ बालक गोद ले लिया। पुत्र प्राप्त कर वह कुछ समय प्रसन्न रहीं, परन्तु पूर्वकृत अपराध को वह भूला नहीं पा रही थी। अक्सर उसे एक सपना आता था जो उसके बचपन की पढ़ी हुई कहानी से मिलती थी कि वह मस्ती से झुमती हुई कहीं जा रही कि अचानक दल–दल में जा गिरी। लाख कोशिशों के बाद भी वह निकल नहीं पा रही। उसके हाथ पैरों में काई उग गई हो और काई ने उसके शरीर को कस कर बांध दिया है। और वह अपने आप को मुक्त नहीं कर पा रही हो।

वह मुझसे फोन पर निराशा भरी बातें करने लगी थी। टी.वी. पर कन्या भ्रूण हत्या पर दिखाए जाने वाले कार्यक्रम देखने पर तो उसकी बेचैनी और बढ़ जाती।

अचानक एक दिन उसका फोन आया। आज उसकी आवाज़ में काफी दम था और वह बहुत खुश थी। उसने मुझे बतलाया कि उसने अपने पाप का प्रायश्चित कर लिया उसने अनाथ आश्रम से एक डेढ़ माह की सुंदर एवं स्वस्थ कन्या को गोद लिया है।

गीता ने उसका नाम 'सृजना' रखा है। गीता ने सृजना का लालन–पालन अच्छे संस्कार दे कर किया। सृजना भी अपनी मेहनत एवं मां–पापा के आर्शीवाद से एक योग्य गायनिक डॉक्टर बन गई।

आज उसी सृजना की शादी करके मैं अपने घर लौट रही हूँ। सृजना की शादी करके मानों आज गीता ने भ्रूण हत्या के पाप का प्रायश्चित कर लिया हो। सृजना की विदाई के पूर्व गीता ने उसे समझाया था कि वह अपने हाथों कभी कन्या भ्रूण हत्या नहीं करेगी और न ही होने देगी।

इस प्रकार के विचारों में खोई हुई मैं अपनी मंजिल पर पहुंच गई, पता ही नहीं चला।

– श्वेता कुलश्रेष्ठ
ए.पी.ई., एच.आई.एस

सामान्य ज्ञान

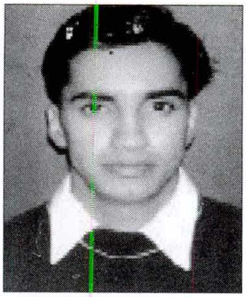

किन्ही पांच प्रश्नों के सही जवाब दें और अपने ज्ञान पर गर्व करें।

प्रश्न 1. गूगल विकसित करने में किस प्रोग्रामिंग भाषा का उपयोग किया गया है?

उत्तर गूगल एसिन्क्रोनस जावा स्क्रिप्ट और एक्स–एम–एल (एजाक्स) भाषा में लिखा गया है।

प्रश्न 2. प्रसिद्ध वेबसाइट "YAHOO" का विस्तार क्या है?

उत्तर Yet Another Hierarchy of Officious Oracle.

प्रश्न 3. "ADIDAS" के क्या विस्तार है?

उत्तर All Day I Dream about Sports.

प्रश्न 4. स्टार टी.वी. नेटवर्क में "STAR" का विस्तार क्या है?

उत्तर Satelite Television Asian Region.

प्रश्न 5. "Baker's Dozen" का क्या अर्थ है?

उत्तर Baker's Dozen का अर्थ है साधारण दर्जन से एक मात्रा ज्यादा। मतलब '13 मद', यह 'Long Dozen' के नाम से भी जाना जाता है।

प्रश्न 6. सन् 1984–85 के सीजन में भारत और पाकिस्तान के बीच खेला गया दूसरा एक दिवसीय क्रिकेट मैच क्यों स्थगित कर दिया गया? जिसमें भारत की रनसंख्या 210/3 के साथ दिलीप वेगसरकर 94 रन संख्या पर नॉट आउट थे?

उत्तर अचानक लोगों को पता चला कि इंदिरा गांधी की मृत्यु हो गयी है। इस वजह से मैच स्थगित कर दिया गया।

प्रश्न 7. वह कौन सा व्यक्ति/रचयिता है जिसने दो अलग–अलग देशों के राष्ट्र गान लिखे?

उत्तर 'रविन्द्र नाथ टैगोर' जिन्होंने भारत और बांग्ला देश दोनों के लिए राष्ट्र गान लिखे। एक भारत के लिए, दूसरा बांग्ला देश के लिए (आमार सोनार– बांग्ला)

प्रश्न 8. किन चार शब्दों से 'गुडबाई' शब्द प्राप्त किया गया?

उत्तर 'गुडबाई' God be with you शब्दों से बनाया गया।

प्रश्न 9. "Agnes Gonxha Bojaxhiu" को किस नाम से बेहतर जाना जाता था?

उत्तर Agnes Gonxha Bojaxhiu मदर टेरेसा थीं।

10. भारत के अलावा और किस देश को 15 अगस्त के दिन ही स्वतंत्रता मिली?

उत्तर दक्षिण कोरिया।

प्रश्न 11. "जेम्स बांड" का कोड '007' उससे किस तरह संबंधित है?

उत्तर क्योंकि 007 यू.एस.एस.आर. का आई.एस.डी. कोड था शीतयुद्ध के दौरान।

प्रश्न 12. पहले एक दिवसीय मैच की पहली गेंद का सामना किसने किया था?

उत्तर Geoffrey Boycott (जेफरी बॉयकाट)।

प्रश्न 13. MC Rushmore पर किन चार राष्ट्रपतियों के चेहरे बने हैं?

उत्तर जार्ज वाशिंगटन, थॉमस जेफरसन, थिओडोर रूजवेल्ट और अब्राहम लिंकन।

प्रश्न 14. वेटिकन के अलावा ऐसा कौन सा देश है जो कि हर तरफ से एक ही देश से घिरा हो?

उत्तर स्मेवजीव हर तरफ से दक्षिण अफ्रिका से घिरा है।

प्रश्न 15. एक ऐसा 'खेल' जिसमें बांए हाथ से खेलने की अनुमति नहीं है?

उत्तर 'पोलो'।

प्रश्न 16. वह कौन सा क्रिकेट खिलाड़ी है जो पहले दक्षिण अफ्रिका के लिए खेलता था और अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंध ल़गने के बाद जिम्बाब्बे का कप्तान था।

उत्तर John Traicos रंग भेद की वजह से प्रतिबंधित कर दिया गया था।

– आशुतोष पाण्डेय
प्रोजेक्ट इंजीनियर, क्यू.आई. डिवीजन

+++

बीबी हो बच्चे हों और प्यारा सा घर भी हो

कभी किसी बात का, ऐसा असर भी हो।
बदले ख्यालात हों, और खुदा का डर भी हो।

आतंकियो के दिल में जगे प्यार की अलख।
बीबी हो बच्चे हों और प्यारा सा घर भी हो।

खुदा के नाम पर लगा रखी है जेहाद।
खुदा की पाकीज़गी का जरा असर भी हो।

निहत्थों और बेगुनाहों पर गोलियां चलाना।
हिजड़ों की करामात है, उन्हें खबर भी हो।

क्या सोचते हो के खुदा, तुम्हे जन्नत देगा।
हैवान होकर सोचते हो कि बशर भी हो।

करते हो हमेशा ही 'गैर मुसलमाना' हरकत।
फिर सोचते हो कि दुआ में असर भी हो।

मै कहता हूँ कि तुम मस्लिम हो ही नहीं सकते।
बिना धर्म के हो तुम, ये खबर तुम्हे भी हो।

– गौरव गोत्रा
सह परियोजना अभियंता, एच.आई.एस.

+++

योग बदलता है जीने का अंदाज

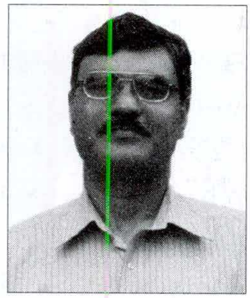

कभी आपने सोचा है कि जिस शरीर को आप स्वयं का स्वामी बताते हैं, समझते हैं, मानते हैं, वह शरीर ही आपका स्वामी बन बैठा है। जिस मन को आप अपना मानते हैं, वह भी जब–तब मनमानी पर उतर आता है। इस प्रकार शरीर और मन को संभालने के लिए आप अपनी भागमभाग की जिन्दगी में डॉक्टरों, स्वामियों, आश्रमों के चक्कर लगाते हैं। लेकिन बिडम्बना यह है कि तन–मन–धन समय सब बर्बाद हो जाने पर भी निराशा ही हाथ लगती है और कभी आप माइग्रेन, कभी घुटनों, कभी ह्रदय व कमर दर्द से बिलखती रीढ़ का रोना लेकर बैठ जाते हैं।

फिर करें क्या? एक सवाल आपने कभी नन्हें से शिशु को जन्म लेने के बाद देखा हैं?जरूर देखा होगा और उसका गलाफाड़ रूदन भी सुना होगा। जीवन का पहला क्षण और रूदन आप क्या समझते हैं। जनाब, मां के गर्भ से जन्म लेने के पश्चात् यह नन्हें–मुन्ने अपनी नलियों को स्वच्छ कर लेना चाहते हैं ताकि उनकी श्वासें जीवन भर सुचारू रूप से चलती रहें। उनका हाथ–पैरों को साइकिल जैसे चलाना, हिचकियां लेना, जब–तब गहरा मुस्करा देना और अपचे दूध को उलट देना– यह सब उसकी योग क्रियाएं ही है। प्रकृति ने उसे इतनी समझ के साथ इस धरती पर भेजा है कि वह अपने तन–धर्म को समझ सके। मन से मां की ममता को जान सके। इसी में उसका जीना और बढ़ना चलता रहता है।

लेकिन अब हम बड़े हो गए हैं, और ये बाल क्रियाएं भूल चुके हैं। नौकरी व्यवसाय कर रहे हैं गृहस्थ धर्म का पालन कर रहे हैं, नाते रिश्तेदारी निभा रहे हैं तो इस मन–धर्म के बारे में क्यों विचार नहीं करते जो हमारे जीवन की आधारशिला है और प्रकृति ने इसे हमें जन्म के समय ही सौंपा है। ध्यान रहे, ईश्वर एक बार ही यह मानव तन देता है, और स्पेयर पार्ट्स भी बाजार में उपलब्ध नहीं हैं। जब तक जीवन है, ये आपके साथ हैं। ये टूटे–फूटे या खराब हुए तो "बियांड रिपेयर" ही रह जाएंगे और आपको मृत्यु–पर्यन्त टूटी–फूटी गाड़ी के समान ढोना पड़ेगा।

आपने प्रकृति को बहुत करीब से देखा होगा। पशु भी देखे होंगे। क्या आपने कभी जंगलों में अस्पतालों को देखा है?क्या वहाँ डॉक्टरों की फौजों को चहलकदमी करते देखा है?नहीं न। सुबह जब आप कभी ध्यान से आकाश की ओर देखें तो पक्षी लम्बी उड़ान भरते, गोल–गोल चक्कर काटते, वापिस धरती पर आकर चह चहाते, फिर विशाल गगन में लौट जाते हैं। यह उनका योग है। पक्षी यदि पंखों को तनाव देकर ऊंची उड़ान नहीं भरेंगे तो उन पंखों का क्या काम? जब चह चहाएंगें नहीं तो उनके जीवन का क्या काम?आपने कुत्ते, बिल्लियों, घोड़े व अन्य जानवरों को भी सुबह–सुबह उठकर, अपने शरीर को खींच कर सामान्य करते हुए देखा होगा। कभी–कभी उन्हें तेजी से सांस लेते व कभी मौन बैठे देखा होगा। ये सब उन्हें प्रकृति से दी हुई सीख है कि कैसे अपने जीवन को प्रकृति के साथ जोड़कर सहज व निरोगी जीवन जी सकते हैं। पक्षी घंटों की दूरी तय करके शाम को अपने घोंसलें में पहुंचते हैं। वे अपने घोसलों से दूर जाकर ही क्यों अपने लिए भोजन खोजते हैं। वह तो उन्हें आस–पास भी मिल सकता है। अरे भाई, वे भी सुबह की सैर पर निकलते हैं और शाम को फिर से सैर करके अपने घोसलें में लौटते हैं।

जब प्रकृति के प्राणी स्वयं को स्वस्थ रखने के लिए अपने शरीर को श्रम से जोड़ते हैं तो मानव को तो ईश्वर ने सोचने–समझने का वरदान भी दिया है। वैज्ञानिक यह बताते हैं कि सूर्य सारे सौर मंडल को प्राण देने वाला है। अतः जो व्यक्ति सूर्योदय से पहले उठता है। वह सूर्य से प्राण शक्ति ग्रहण करता है। पर जो सूर्योदय के पश्चात उठता है, सूर्य उससे प्राण शक्ति छीन लेता है। आप स्वयं निर्णय करें कि आप शक्तिवान बनना चाहते हैं या शक्तिहीन। इस प्राण

शक्ति का चयन करने के लिए योग करना होगा। योग हमारे अंग प्रत्यंगों को सहजता से क्रियाशील बना देता है। यह व्यायाम नहीं, अपितु साधना है। अतः भ्रमित न होकर नित नई परिभाषाओं में न उलझें, स्वविवेक से काम लें, परखें व अपनी मंजिल तय करें। जब कभी भी आपके दिमाग में आए कि योग के लिए तो बूढ़े और बिमार लोग ही जाते हैं तो जान लें कि यह बुढ़ापा और बीमारी योग से दूर भागने से आती है, न कि योग से जुड़ने से। अतः स्वयं समझों और दूसरों को भी समझाओं। अगर हमें योग का मीठा फल चखना है तो हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि 'सहज पके सो मीठा होय'। प्रकृति पेड़ों पर किसी लगे फलों में हर क्षण रस भरती है। जब तक वह रस पूरा नहीं भरता, फल खट्टे व अनुपयोगी रह जाते हैं। योग हमारे जीवन में रस भरता है। यह कार्य इतना धीरे व सुचारू रूप से होता है कि तुरन्त इसका परिणाम सामने नहीं आता। धैर्य न खोएं व दृढ़ संकल्प करके योग साधना में लगें रहें। कुछ लोगों के निवास से योग केन्द्र दूरी पर होते हैं या कुछ लोगों का मानना है कि पार्क व खुले स्थान पर जाकर योग करेंगे तो आस–पास के साधकों के लिए वे हंसी का पात्र बन जाएंगे लेकिन यदि आप पार्क या खुले स्थान पर योग साधना केन्द्रों में आते हैं तो अनुभवी शिक्षकों की उपस्थिति में आसन, प्राणायाम एवं ध्यान का अभ्यास सही तरीके से करके अत्यंत लाभान्वित हो सकते हैं।

– सुभाष चंद
प्रशासनिक अधिकारी

हिन्दी में प्राप्त पत्र का उत्तर हिन्दी में दिया जाना चाहिए (नियम-५)।

राजभाषा नियम की धारा ३(३) के अंतर्गत निम्नलिखित दस्तावेज आदि हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में जारी किए जाने अवश्यक हैं:

संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएं, प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्टें, प्रेस विज्ञप्तियां, संसद के किसी सदन या दोनों सदनों के समक्ष रखी जाने वाली प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्टें, सरकारी कागजात, संविदाएं, करार, अनुज्ञप्तियां, अनुज्ञापत्र, टेंडर नोटिस तथा टेंडर फार्म आदि द्विभाषी रूप में ही जारी की जाएं।

आज की बहस

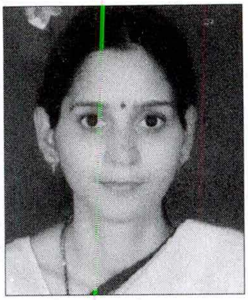

हिन्दी दिवस का जिक्र आते ही वातावरण हिन्दीमय हो जाता है। हर जगह हिन्दी की छाप दिखाई पड़ने लगती है। देखते ही देखते ऑफ़िस– कार्यालय में, प्रपोजल– प्रस्ताव में रिकवेस्ट– प्रार्थना में और स्पीच– भाषण में बदल जाते हैं। और साथ ही साथ हिन्दी की अस्मिता पर बहुत बड़ा सवालिया निशान लग जाता है कि आज हिन्दी की वास्तविक स्थति क्या यही है कि समय–समय पर ताजबीनों की तरह उसका भी श्रृंगार कर इति श्री समझ लिया जाए इस तरह क्या हिन्दी की स्थिति का सही मूल्यांकन किया जा सकता है? हिन्दी भाषा से संबंधित कार्य करने वाले विद्वानों का मत है कि किसी भाषिक समुदाय में इनका सही आंकलन कई पीढ़ियों के भाषिक ज्ञान के आधार पर ही हो सकता है। संपर्क की स्थिति में भाषा के प्रकार्य और भाषा निष्ठा के परिप्रेक्ष्य में भी इन स्थितियों का सही मूल्यांकन संभव है। जहां तक हिन्दी की वास्तविक स्थिति का प्रश्न है अगर युवा पीढ़ी की बात की जाए तो हम पाते हैं कि आज की युवा पीढ़ी मिश्रित कोड अथवा अंग्रेजी को महत्व दे रही है। इसके कारण के रूप में कई बिन्दु उभर कर आयें हैं जैसे– अंग्रेजी से जुड़ी सामाजिक प्रतिष्ठा की भावना, उच्च शिक्षा सामग्री, कैरियर की नवीन संभावनायें, एवं संवाद की सरलता आदि। अंग्रेजी की तरफ़ इस बढ़ते हुए लगाव पर ध्यान दें तो इसका प्रतिशत युवा पीढ़ी में अधिक मिलता है वहीं इस पीढ़ी के माता–पिता परस्पर संवाद के लिए हिन्दी या अपनी क्षेत्रीय बोली का प्रयोग करते हैं। हिन्दी के पक्ष में जो सबसे सशक्त तथ्य उजागर हुआ है वह यह है कि आज भी 65 प्रतिशत परिवारों की आने वाली पीढ़ी (छोटे बच्चे) मातृभाषा के रूप में ही हिन्दी सीखती हैं। यह अवश्य है कि उस हिन्दी का स्वरूप किताबी हिन्दी से भिन्न है और उसमें बोलचाल के अंग्रेजी शब्दों का वही अस्तित्व है जैसा अंग्रेजी में ग्रीक, लैटिन के शब्दों का है।

आज हिन्दी की स्थिति को देख उसकी पीड़ा से विचलित होने वालों में मात्र साहित्यकारों की गिनती की जा सकती है। आम हिन्दी समाज इससे बेखबर है। देवताओं की तरह तीज त्योहारों पर ही हिन्दी को भी याद किया जाता है। हिन्दी दिवस आने पर सभी सरकारी संस्थानों या अन्य स्थानों पर हिन्दी को लेकर कुछ कर्मकाण्ड कर दिये जाते हैं। वहीं बैक, न्यायालय आदि स्थानों में कुछ विभाग ऐसे हैं जहाँ हिन्दी पखवाड़ा और आयोजन हिन्दी के नाम कुछ बजट के इस्तेमाल के लिए होते हैं। इन संस्थानों में आप जाइए तो आपको दीवारों पर हिन्दी से संबंधित कुछ पंक्तियाँ लिखी मिल जायेंगी – 'यहाँ हिन्दी भाषा में लिखे चेक व फार्म स्वीकार किये जाते हैं'। यह सोच का विषय कि 1977 में विदेश मंत्री के रूप में संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी में पहली बार बोलने वाले पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी को बाद में राष्ट्रसंघ में अंग्रेजी में क्यों बोलना पड़ा? क्या 1977 के बाद राष्ट्रसंघ में हिन्दी बोलने पर किसी ने कोई प्रतिबंध लगा दिया? या यह माना जाये कि पूर्व प्रधानमंत्री की हिन्दी की मैलिक सोच समाप्त हो गई है। वास्तव में सारी समस्याओं की जड़ ये नौकरशाह हैं। इनसे हिन्दी को कोई लाभ नहीं मिलने वाला, हिन्दी के लिए तो हिन्दी प्रेमियों को ही आगे आना होगा।

ऐसा नहीं है कि हिन्दी का प्रसार नहीं हो रहा। आज इंटरनेट पर अध्ययन सामग्री सर्च करने की साइट Google पर हिन्दी भाषा में भी सामग्री उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त, मोबाइल फ़ोन द्वारा हिन्दीकरण का तेजी से विस्तार हुआ है। हिन्दी में ई मेल करने के लिए अब हिन्दी भाषा का चुनाव कर सकते हैं। बाजार में हिन्दी के कई सॉफ्टवेयर उपलब्ध हैं जिनमें 'हिन्दी डिक्शनरी सॉफ्टवेयर', हिन्दी टाइपिंग सॉफ्टवेयर एवं Google का 'अंग्रेजी–हिन्दी ट्रांसलेशन सिस्टम' आदि उपलब्ध हैं जो कहीं न कहीं इसकी बढ़ती हुई लोकप्रियता का ही परिणाम है। टी.वी. चैनलों के धारावाहिकों और रियल्टी शोज़ के कारण महाराष्ट्र, तमिलनाडु, मेघालय आदि राज्यों में हिन्दी की लोकप्रियता बढ़ी है। इस प्रकार जहाँ अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में बोलचाल के रूप में हिन्दी की स्थिति मजबूत हो रही है वहीं हिन्दी के केन्द्रों में इसकी स्थिति कमजोर हुई है। इसके पीछे किसी न किसी रूप में सरकारी विज्ञप्तियों में प्राप्त अधकचरा हिन्दी अनुवाद है जिसमें हिन्दी की मुलायमियत और सौंधेपन को

त्याग दुरूह शब्दावलियों का चयन कर उसे बोझिल बना दिया गया है और बेजोड़ रवानगी वाली यह हिन्दी 'स्कंध परिसमापक, अग्राह्य भुगतान' जैसे न समझ में आने वाले शब्दों के भार तले दब गयी है। अतः हमें शब्दों के चयन में उदार रुख अपनाना चाहिए। पण्डित, योग, साधू ये सभी हिन्दी के शब्द हैं अंग्रेजी शब्दकोश में इन्हें ज्यों का त्यों रखा गया है। यही अंग्रेजी के विस्तार का कारण है और प्रति वर्ष उनके कोश में सैकड़ों शब्द बढ़ जाते हैं। जिस दिन हिन्दी प्रेमी इस सत्य को स्वीकारेंगे वहीं से हिन्दी का उत्तरोत्तर विकास होगा। आज मीडिया इस तथ्य को समझ चुका है और इसके अनुपालन का ही फल है कि मीडिया में हिन्दी की स्थिति बहुत मजबूत दिखाई पड़ रही है। आवश्यकता है साहित्यकार एवं विद्वानों को समझाने की। प्रचार–प्रसार की बड़ी–बड़ी बातें होती हैं, चर्चाएं होती हैं। कुछ भाषाविद् और साहित्यकार दूसरी भाषा से शब्दों के लेने के पक्षधर हैं लेकिन अब भी बहस यहीं टिकी है कि शब्द समूह कैसे बढ़ाएँ।

– डॉ. सुमेधा शुक्ला
कनिष्ठ भाषाविद्, एन.एल.पी.

+++

मुन्ने का रिश्ता

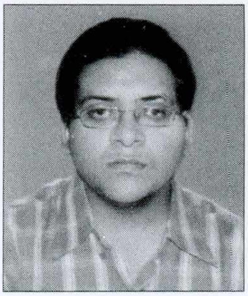

अंकल
ऐ जी सुनती हो,
जमुना प्रसाद जी आए हैं,
मुन्ने के लिए रिश्ता लाए हैं।
नाक नक्श की ठीक है,
रंग की गोरी है,
लखपति बाप की एकलौती छोरी है।
माल भत्ता पूरा है,
टी.वी. फ्रिज लाएगी,
मरसीडीज कार दहेज में आएगी।
पर एक छोटी सी कमी खलती है,
लड़की जरा लंगड़ाकर चलती है।

इस बात पर आंटी बोली ....
बात पक्की आंख मूंदकर कर लीजिए,
शगुन पेशगी आज ही ले लीजिए,
मुन्ने को मनाना मेरा काम है,
आम के आम गुठलियों के भी दाम हैं।
लंगड़ी वंगड़ी बात तो आनी जानी है,
भला बहु से हमें क्या दौड़ लगवानी है।

– सुलभ अग्रवाल
मैनेजमेंट ट्रेनी, ई.आर.पी.

+++

फिर कोई बेटी न पैदा हो तेरी जमीन पर

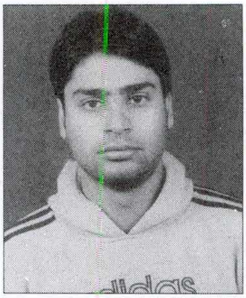

न चाहते थे मगर वजूद में आना पड़ा हमें।
खतायें थी किसी की, सर झुकाना पड़ा हमें।

जिस्म से खेलकर मेरे दरिंदे बरी हो गये।
तोहमतों को मगर उम्र भर उठाना पड़ा हमें।

रस्मों के नाम पर कभी जुल्मों के नाम पर।
सुलगती आग में खुद को जाना पड़ा हमें।

दुआओं के शहर में भी तू नहीं था मेरे मौला।
हर बार वहाँ से खाली हाथ आना पड़ा हमें।

फिर कोई बेटी ना पैदा हो तेरी जमीन पर।
ये सोचकर शम–ए–हयात बुझाना पड़ा हमें।

इस पेट के लिए तो कभी बच्चों के वास्ते।
जहाँ पे जाना पाप है वहाँ भी जाना पड़ा हमें।.

– गौरव गोत्रा
सह परियोजना अभियंता, एच.आई.एस

+++

हिन्दी भारतीय संस्कृति की आत्मा है।
– कमलापति त्रिपाठी

हिन्दी केवल राजभाषा नहीं है, बल्कि विश्व भाषा बन रही है।
–राजीव गांधी

राष्ट्र के रूप में हिन्दी हमारे देश की एकता में सबसे अधिक सहायक सिद्ध होगी।
–पं. जवाहर लाल नेहरू

सी-डैक नोएडा ओपिनीयन पोल

हमारा दिमाग कभी खाली नहीं बैठता, हमेशा कुछ न कुछ उसके अंदर चलता ही रहता है। मेरे दिमाग में भी अपने संस्थान से संबंधित कई विचार आते जाते रहते हैं। जैसे– कितना अच्छा होता अगर मेरे संस्थान में यह होता, अच्छा होता अगर यह नहीं होता इत्यादि। मुझे लगा कि क्यों न मैं अपने विचारों को एक क्रमवार तरीके से दूसरों के साथ बाटूं और अन्य लोगों से जो सी–डैक से जुड़े है, इसके बारे में राय उनसे लूं। 400–500 कर्मचारियों के पास जाकर उनकी राय लेना, आसाम काम नहीं था। ऐसे में मेरे मित्र सत्या ने कहा क्यों न मैं अपने विचारों को अच्छे तरीके से एक सर्वे का रूप देकर सारे लोगों को मेल कर दूं। विचार अच्छा था, मेरे मेल के जवाब में, जब मुझे जबाब मिलने शुरू हुए, तो मेरा मेलबॉक्स इतने सारे जबावों को पचा ना सका और कुछ ही समय में आउट ऑफ कोटा हो गया।

सबसे पहले मैं धन्यवाद करना चाहूंगा अपने सारे मित्रों का जो सी–डैक परिवार के अभिन्न अंग हैं, उनकी अभूतपूर्व प्रतिक्रिया के बिना मैं सर्वे कभी पूरा नहीं हो पाता। धन्यवाद आपका जो आपने अपना कीमती समय निकाल कर इस सर्वे में हिस्सा लिया, और इसे सफल बनाया। मैं आभारी हूं अपने वरिष्ठ अधिकारियों का जिन्होंने इस सर्वे में हिस्सा लिया और मेरा मार्गदर्शन भी किया।

अब हम सवालों पर आते हैं और उनका परिणाम देखते हैं

1. क्या आप चाहते हैं हमारे संस्थान में एक ड्रेस कोड हों?

82% प्रतिशत लोगों ने कहा फॉरमल और नॉन फॉरमल पहनने से कोई फोई फर्क नहीं पड़ता

12% लोगों ने कहा सोमवार से गुरूवार फार्मल, शुक्रवार नॉल फॉरमल

4% लोगों ने कहा हमेशा फॉरमल पहनना ही सही है

2% पता नहीं

अगर 82% लोगों के मतों पर आते हैं तो एक बात साफ हो जाती है, मायने पहनावा नहीं, मायने काम रखता है। हाँ, एक बात है, हम जो भी पहनें वह साफ सुथरा और शालीन हो।

2. क्या आपको लगता है इम्पलाई को उत्कृष्ठ काम के लिए अवार्ड दिए जाने पर हमारी कार्य-संरकृति में फर्क पड़ेगा?

यह सवाल बहुत दिनों से मेरे दिमाग में आ रहा था कि हमारे संस्थान में उत्कृष्ठ काम करने पर कर्मचारी को पुरस्कृत करना चाहिए। जैसे– इस महीने का उत्कृष्ठ कर्मचारी/इम्पलाई ऑफ द मंथ पुरस्कार या तकनीकी उत्कृष्टता पुरस्कार/टेक्निकल एक्सिलेंस अवार्ड इत्यादि। मैंने इस मसले पर अपने सहकर्मी से बात की और उसका जवाब सुन कर मैं दंग रह गया, उसने कहा पुरस्कार दिए जाने पर सारे लोग पुरस्कार के लिए उत्साहित होकर अधिक काम करना शुरू कर देंगे"।

इस सर्वे में लोगों का विचार भी कुछ अलग ही था।

90% लोगों ने कहा, कि पुरस्कार दिए जाने पर हमारी कार्य संस्कृति (वर्क कल्चर) में सुधार होगा।

4% लोगों लोगों ने कहा कि पुरस्कार लोगों को उत्साहित नहीं करेगा

5% लोगों ने कहा पुरस्कार जिसे दिया गया है केवल वही उत्साहित होगा

1% लोगों ने कहा, पता नहीं

3. क्या सी-डैक में जिम या आउटडोर गेम होने चाहिए?

एक स्वस्थ दिमाग एक स्वस्थ शरीर के अंदर निवास करता है। लगातार 5–6 घंटे अगर काम किया जाए तो थकान महसूस होती है और हमारे काम करने की गति भी धीमी हो जाती है। ऐसे मौके पर अगर जिम में कुछ हाथ–पैर चला लिया जाए या टेबल टेनिस के 2–4 शॉट लगा लिया जाए तो हमारा दिमाग 5–10 मिनट में ही तरोताजा हो जाता है। हमारे सहकर्मी भी इस मसले पर कुछ अलग नहीं सोचते।

99% लोगों ने कहा कि जिम या खेल हमारे दिमाग को तरोताजा करेगा

1% लोग ऐसे भी थे जिन्होंने कहा ये हमारे समय की बरबादी है।

4. क्या सी-डैक को गैर सरकारी संस्थाओं (एन.जी.ओ.) के साथ मिलकर सामाजिक रूप से पीछड़े लोगों के लिए कुछ करना चाहिए?

यह सवाल हमेशा मेरे दिमाग में आता रहता है, कभी ऑटो पर

बैठे हुए अपने किसी सहयात्री को देखकर, एक महिला मैली साड़ी में लिपटी अपने 1 साल के नंगे मिट्टी से सने गंदे बच्चे को गोद में लिए हुए, या फिर राह चलते 4–5 साल के बच्चे को भीख मांगते। मैं हमेशा यह महसूस करता हूँ, क्या हमारे कुछ सामाजिक उत्तरदायित्व हैं, इन पिछड़े लोगों के उत्थान के लिए। जिस समाज नें हमें इतना कुछ दिया, क्या हमारी भी जिम्मेदारी नहीं कि हम भी बदले में उसे कुछ दें, और उसे सुंदर बनाने के लिए एक जुट हो कर सामने आएं। अकेले तो नहीं पर अगर एकजुट हो कर हम साथ आएं तो एक बदलाव तो हम ला ही सकते हैं। देखते हैं हमारे सहकर्मी मित्रों का क्या विचार है इस मसले पर।

96% लोग कहते हैं, हमारा सामाजिक उत्तरदायित्व भी है, और हमें किसी एन.जी.ओ. के साथ मिलकर उसमें अपना योगदान देना चाहिए।

2% लोग ऐसे हैं जो कहते हैं कि हमें केवल अपने कार्यालय के काम से ही मतलब रखना चाहिए।

1% लोग ऐसे हैं जो कहते हैं यह जरूरी नहीं कि सी–डैक एन.जी.ओ. के साथ मिलकर काम करे सामाजिक उत्थान के लिए।

1% लोग ऐसे हैं जो कहते हैं, सामाजिक योगदान हमारा काम नहीं हैं।

5. क्या आप सी-डैक परिवार का हिस्सा होकर खुश हैं?

किसी भी कंपनी का विकास उसके अपने लोगों की खुशी पर बहुत हद तक निर्भर करता है। क्योंकि एक खुश कर्मचारी ही शत–प्रतिशत योगदान अपने काम पर दे सकता है। आइए देखतें है हमारे सी–डैक परिवार के लोग इसके बारे में क्या सोचते हैं

91% लोगों ने कहा कि वह गर्व महसूस करते हैं कि सी–डैक ने भारत का पहला सुपर कंप्यूटर बनाया।

7% लोगों ने कहा कि उन्हें यहां का काम पसंद है।

2% लोगों ने कहा कि वे सी–डैक के अंदर खुश ही नहीं है

0% जहां तक आर्थिक संतुष्टी की बात है, इस विकल्प के लिए एक भी वोट नहीं मिला।

6. आपके अनुसार सी-डैक, नोएडा का सबसे अच्छा विभाग कौन सा है?

इस सर्वे का सबसे विवादास्प्द सवाल, जब यह सवाल मेरे दिमाग में आया, तो मैंने यह कभी नहीं सोचा था कि इसके जवाब में हम अपने ही डिपार्टमेंट का नाम दें। हम उस डिपार्टमेंट का नाम दें जो अभी सी–डैक के लिए सबसे अच्छा काम कर रहा है। हमें यह सझना चाहिए कि हमें कंपनी के लिए बफादार होना चाहिए न कि अपने विभाग के लिए। क्योंकि जहां भी, जिस विभाग में हमारी जरूरत हो हमें कंपनी के लिए वहां काम करना पड़ सकता है। एक गड़बड़ और हो गई, कुछ विभागों का नाम ही लिस्ट से छूट गया, क्योंकि मैने वही डिपार्टमेंट डाले थे जो सी–डैक के वेबसाइट के होमपेज पे दिखे। मैं क्षमा चाहता हूं उन सभी मित्रों और सहकर्मियों से जिनके विभागों का नाम इस लिस्ट में नहीं था।

जैसा आप समझ गए होंगे, जिस विभाग से सबसे अधिक वोट आए वो वही सी–डैक का सबसे अच्छा विभाग बन कर सामने आया। परिणाम इस प्रकार है;

34% ई–गवर्नेंस
22% एच.आई.एस.
11% एफ.एस.
9% एस.ओ.एम.
9% एस.एन.एल.पी.
7% इम्बेडिड सिस्टम
6% क्यू.आई.
2% एच.आर.

7. क्या हमारे यहां नियमित रूप से गोष्ठियां (सेमिनार)/प्रशिक्षण कार्यक्रम होने चाहिए?

तकनीकी रूप से अपडेटेड कर्मचारी ही कंपनी में अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान दे सकता है। नई टेक्नॉलोजी खुद सीखने में बहुत समय लग जाता है। हां ये बात अलग है कि किसी संस्थान को ट्रेनिंग या सेमिनार करवाने के लिए पैसे भी खर्च करने होते हैं।

91% लोगों ने कहा, सेमिनार में हिस्सा लेकर उनकी तकनीकी कुशलता बढ़ेंगी

7% लोगों ने कहा मैनुअल ट्रेनिंग, इंटरनेट के जरिए पाई जानकारी से अधिक महत्वपूर्ण है।

1% लोगों ने कहा सेमिनार/ट्रेनिंग संस्थान के समय एवं पैसे की बरबादी है

1% लोगें ने कहा हम सारी जानकारी इंटरनेट से ही ले सकते हैं

8. क्या हमारे संस्थान से मासिक/त्रिमासिक मैगजीन छपनी चाहिए?

मासिक या त्रिमासिक मैगजीन एक अच्छा विचार हो सकता है जो यहां के कर्मचारियों को अपने विचारों की अभिव्यक्ति के

लिए एक प्लेटफार्म दे सकता है। वरिष्ठ अधिकारी भी इस मैगजीन के द्वारा अपना अनुभव और तकनीकी कौशल सब के साथ बांट सकते हैं।

85% लोगों ने कहा हमारी एक मासिक/त्रिमासिक मैगजीन होनी चाहिए, जिसके जरिए हम हमने अपने विचारों का आदान–प्रदान कर सकें।

10% लोगों ने कहा मासिक/त्रिमासिक मैगजीन की जरूरत नहीं है, यह कंपनी के खर्च को ही बढ़ाएगी।

5% लोगों ने कहा हमें मैंगजीन की जरूरत नहीं, मार्केट में बहुत सारे मैगजीन उपलब्ध हैं।

9. हम अपना ब्रांड वैल्यु कैसे बढ़ा सकते हैं?

सारी दुनिया ब्रांड के पीछे भागती है। चाहे मार्केट से साबुन लेना हो या फिर मॉल से कपड़े। लोग कपड़े की क्वालिटी बाद में उसके ब्रांड का टैग पहले देखते हैं। क्या कुछ ऐसा होना चाहिए कि, जब हम सी–डैक का नाम लें, तो सामने वाले के आंखों में एक चमक दिखें। आइए देखे लोगों ने उसमें अपनी क्या राय दी,

27% लोगों ने कहा हमें रिसर्च बेस्ड प्रोजेक्ट पर अधिक काम करना चाहिए

58% लोगों ने कहा, अच्छा वेतन एवं जॉब सिक्युरिटी लोगों को क्वालिटी वर्क के लिए प्रोत्साहित करेगी

13% लोगों ने कहा, समय पर क्वालिटी प्रोजेक्ट की डिलिवरी से सी–डैक का साख मार्केट में बनेगी

2% लोगों ने कहा, उन्हें नहीं पता

10. क्या हमारे पास तकनीकी सामग्री की ऑनलाइन डाटाबेस होनी चाहिए?

कई लोग ऐसे होते हैं जो आज जावा के प्रोजेक्ट में हैं तो कल डॉट–नेट के प्रोजेक्ट में, या फिर लोग जब नई–नई ज्वाइनिंग लेते हैं तो वो अपनी तकनीकी जानकारी के लिए गूगल पर सर्च करते रहते हैं। इस तरीके से जानकारी मिलने में बहुत समय लग जाता है। हमारे यहां लगभग सभी लेटेस्ट टेक्नॉलोजी जैसे, जावा, डॉट नेट, एस.ए.पी. इत्यादि पर कोर्सेज करवाए जाते हैं। क्यों न ऐसा हो इन कोर्सेज के लिए तैयार अच्छे मैटेरियलस को हम आई.सी–डैक की पोर्टल पर डाल दें। जहां से सी–डैक के कर्मचारी आसानी से अपनी जरूरत की जानकारी ले सकें।

83% लोगों ने कहा ऑनलाइन मैटेरियल, संस्थान का समय एवं पैसा बचाने में मदद करेगा

8% लोग कहते हैं यह कर्मचारियों का तकनीकी कौशल बढ़ानें में मदद करेगा

7% लोग कहते हैं हमें इसकी जरूरत नहीं, हम गूगल के जरीए सारी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं

2% लोगों ने कहा, पता नहीं।

यह सर्वे मेरे द्वारा एक छोटा सा प्रयास था जहां मैंने अपने कुछ विचार रखे थे। हो सकता है अन्य लोगों के दिमाग में और भी अच्छे विचार हों जो कि अभी तक सामने न आ पाए। उन्हें सामने आने की जरूरत है किसी भी रूप में, चाहे वह मैगजीन के जरिए हों चाहे किसी और तरीके से। क्योंकि जाग कर, एक जुट होकर ही हम एक कार्य संस्कृति विकसित कर सकते हैं। अपनी एक ब्रांड वैल्यु बना सकते हैं।

– विकास कुमार
जूनियर रिसर्च फैलो, गुणवत्ता सुधार प्रयोगशाला

देश को एक सूत्र में पिरोने वाली भाषा हिन्दी ही हो सकती है।
– लाल बहादुर शास्त्री

हिन्दी के पौधे को हिन्दू और मुसलमान दोनों ने सींचकर बड़ा किया है।
– जहूरबख़्श

सबको हिन्दी सीखनी चाहिए। इसके द्वारा भाव विनिमय में सारे भारत को सुविधा होगी।
–चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

जिंदगी की किताब

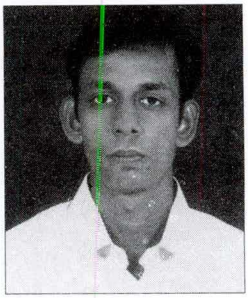

जिंदगी तु तो है एक किताब,
पढ़ रहा हूँ पन्ने पलट रहा हूँ
आती है यादें कुछ पुराने पन्नों की,
चमक गई आखें, उछल पड़े हैं मन;
करे मन ये साहस,
कहे, आ लौट चलें पीछे;
मन की क्या है, मन तो मन,
समय भी क्या कभी लौटे है पीछे?
दिया है समय नें ये नारा, 'चलो मेरे साथ',
करते रहो प्रयास,
करूं मैं प्रयास, समय ने पुकारा है;
भविष्य की बात छोड़ो, वर्तमान तो हमारा है;
पर कभी होती है जिज्ञासा,
जानु आगे के पन्नों की गाथा,
हाथ लगती है निराशा,
दिखता है केवल कुहासा;
कुहासे का क्या है, दूरी का दामन थामे, नजदीकी से है भागे;
चलुं समय के साथ, करूं कुहासे को पार;
दिख पड़ी है मंजिल, निकल पड़े हैं रास्ते;
करते रहना है प्रयास,
आगे के पन्ने हैं क्या?
वर्तमान पन्नों का सा;
जिंदगी तु तो है एक किताब,
पढ़ रहा हूँ, पन्ने पलट रहा हूँ।

– विकास कुमार
जूनियर रिसर्च फैलो, गुणवत्ता सुधार प्रयोगशाला

बहारों को देखा है मैंने पतझड़ में झड़ते हुए

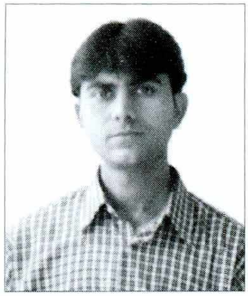

बहारों को देखा है मैंने पतझड़ में झड़ते हुए,
सुखों को देखा है मैंने दुखों से लड़ते हुए
जिंदगी ही जिंदगी की गुलाम हुई है इस कदर
कि हर सुनहरे पल को देखा है मैने तिल–तिल मरते हुए,
हाँ देखा है मैंने बहारों को पतझड़ में ....

श्याम की लालिमा तो चाहती थी आकाश में ठहरना कुछ देर और
लेकिन चांद के कहने पर, रात ने मना कर दिया,
उस सुनहरी शाम के जहम में एक डर भर दिया
कि देखा है मैंने सुनहरी शामों को काली रातों के लिये परवान चढ़ते हुए,
हाँ देखा है मैंने बहारों को पतझड़ में ....

रात ने सोचा कि अब सारी जिंदगी मेरी है मेरे सुकुन के लिये है
लेकिन कुदरत को ये मंजूर न था कि कुछ समय बाद
कुछ जादुई चहचहाट ने रात की उस अंधकारमयी खामोशी को भंग कर दिया,
जो डर काली रात ने सुनहरी शाम के जहम में भरा था
कुछ वैसा ही डर चहचहाटे ने काली रात के जहम में भर दिया,
कि देखा है मैने उस काली भयानक रात को मासूम पक्षियों के सामने गिड़गिड़ाते हुए
हाँ देखा है मैंने बहारों को पतझड़ में ....

बचपन तो मासूम था नादान था लेकिन वो जवानी के आगाज से परेशान था,
कुछ ही पल बिता पाया था बचपन जिंदगी के साथ, एक बात होगी
बचपन की जवानी से मुलाकात हो गयी जिस बात से डरता था बचपन वही बात हो गयी
जवानी के जोश को देखकर बचपन कंप कंपा गया
कुछ देर और चलना चाहता था लेकिन लड़खड़ा गया
कि देखा है मैने जवानी के जोश में मासूम बचपन का दम छुटते हुए हाँ देखा हैं
मैंने बहारों को पतझड़ में

जवानी खूबसूरत है, जोशीली है जमाने को जीतने का जूनून इसमें साफ नजर आता है
इसके आत्म विश्वास की मैं प्रशंसा करता हूँ लेकिन इस खूबसूरत, विशाल, आत्म विश्वास
को देखा है मैने बुढ़ापे की देहलीज पर हाथ मलते हुए
हाँ देखा है मैंने बहारों को पतझड़ में ....

– मनोज पुरोहित, वयाख्याता
ई–गवर्नेंस

लेखनी

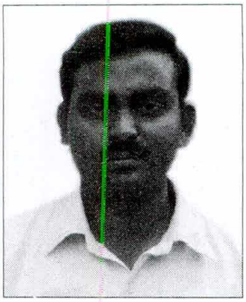

यह आवश्यक नहीं कि सदैव प्रत्येक लेख या कहानी की भूमिका लिखी जाए। वर्तमान समय में पाठक स्वतः ही अपनी सूझबूझ और बुद्धिमानी से किसी भी लेख या कहानी की कुछ आरम्भिक पंक्तियाँ पढ़कर ही उसके सारांश को भांप लेता है किन्तु कभी–कभी लेखनी भी अपनी चतुराई दिखाने से बाज नहीं आती और सीधी राहों पर चलते–चलते रास्ते से उतरकर नदी, पहाड़, झरने, आकाश या फिर पाताल में उतर जाती है और पाठक को अपना पीछा करने पर विवश कर देती है।

जी हाँ, लेखनी को कभी–कभी तो एक नादान बच्चे, असहाय वृद्ध या फिर किसी विक्षिप्त व्यक्ति के मन को भी टटोलना पड़ता है तो कभी–कभी बुद्धिमानों की जासूसी भी करनी पड़ती है।

लेखनी समय–सीमा, दिन–रात, आंधी–तूफान, बारिश–सूखा, सर्दी– गर्मी, अमीरी–गरीबी या फिर जाति–धर्म से कदापि प्रभावित अथवा प्रतिबंधित नहीं होती और झांसी की रानी की तलवार की तरह निडरता से आगे बढ़ती रहती है।

लेखनी सदैव लेखक के लिए एक अच्छे सलाहकार का कार्य करती है और कुछ भी लिखने से पहले लेखक को उसके अच्छे या बुरे परिणामों का बोध करा देती है। वह लेखनी ही है जिसकी शक्ति की कोई सीमा नहीं और कहते हैं कि इसकी मार भी बहुत बुरी होती है।

लेखनी के दम पर ही कोई लेखक, कवि, साहित्यकार, डॉक्टर, वकील, इंजीनियर या फिर कलैक्टर बन पाता है और कभी–कभी नाराज हो जाने पर यह व्यक्ति को गुण्डा, अपराधी या बैड कैरेक्टर भी बना डालती है और यदि समय रहते उन गलतियों को सुधार लिया जाए तो यह दयावान बन जाती है।

यहाँ तक कि लेखनी ने समाज में पनपते अत्याचार, अन्याय, भ्रष्टाचार, गरीबी तथा बेरोजगारी से तंग आकर उसके विरूद्ध अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते हुए संविधान तक लिख डाला।

लेखनी की उपमा देवी दुर्गा से की जाए तो कोई अतिश्योक्ति न होगी क्योंकि कहीं पर यह न्यायाधीश की ऊंची कुर्सी पर बैठकर न्याय करती है तो कहीं ईश्वर के भेजे हुए प्रतिनिधि (डॉक्टर) के रूप में मरते हुए को जीवनदान देती है। कहीं यह गुरू या शिक्षक के रूप में शिक्षा एवं संस्कार की गंगा बहाती है तो कहीं निडर पत्रकार बनकर समाज में चल रही बुराईयों तथा भ्रष्टाचार के खिलाफ आग उगलती है। कहीं यह निःस्वार्थ भाव से एक आम नागरिक बनकर या फिर स्वयं सेवी संस्था के रूप में परोपकार हेतु जनहित में सक्षम न्यायालय के समक्ष याचिका तक दायर कर बैठती है तो कहीं विद्यार्थी बनकर अपनी शैक्षणिक और संस्कारी क्षमता को सत्यापित करती है। कहीं यह सीमा पर लड़ते हुए सिपाही का आत्म विश्वास बढ़ाती है तो कहीं दोस्त बनकर दूर बैठे अपने किसी मित्र को सामने ला खड़ा करती है।

वर्तमान समय में लेखनी ही एक ऐसा जीव है जो अमर–अजर है और एक हठ योगी की भांति सदियों से अपनी तपस्या में लीन है। समय–समय पर कुछ असुर एवं दानव रूपी असमाजिक शक्तियाँ इस तपस्विनी रूपी लेखनी का विरोध भी करती आयी हैं किन्तु लेखनी अपनी कठिन तपस्या को सम्पूर्ण करके देवताओं की शक्तियाँ प्राप्त कर चुकी है जिसे अब कोई हरा नहीं सकता।

मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि लेखनी रूपी आलौकिक शक्ति का छलपूर्वक राक्षस रूपी असमाजिक तत्वों के हाथों में पड़कर कभी भी दुरूपयोग न हो।

– मुकेश
कार्यालय सहायक, वित्त विभाग

बुढ़ापा : एक अभिशाप

हमारे भारत देश में माता–पिता को भगवान से भी ऊपर का दर्जा दिया गया है। अगर मनुष्य अपने माता–पिता की पूरे तन, मन और धन से सेवा करता है तो भगवान भी उस पर कृपा दृष्टि बनाए रखते हैं और उसे किसी प्रकार का कष्ट नहीं होने देते हैं। लोगों का मानना है कि माता–पिता के चरणों में ही चारों धाम विधमान हैं। माता–पिता अपने बच्चों की सभी प्रकार से आवश्यकताएं पूरी करते हैं। जब बच्चा छोटा होता है और हंसकर किलकारियां मारता है तो सारे घर में खुशी का वातावरण फैल जाता है। बच्चा जब युवा अवस्था में शिक्षा, क्रीड़ा एवं व्यवसाय के क्षेत्र में उपलब्धियां हासिल करता है तो घर में खुशी का ठिकाना नहीं रहता। हर माता–पिता अपनी हैसियत से ज्यादा देने की कोशिश करते हैं। खुद तंगी में रह कर भी बच्चों की हर जरूरत को पूरा करने की कोशिश करते हैं और उनकी हर तरह से तरक्की की कामना करते हैं। उनकी खुशी से बहुत खुश होते हैं और उनके जरा से दुख से बहुत दुखी हो जाते हैं। हर समय भगवान से उनकी खुशहाली की कामना करते हैं। प्रायः यह देखा गया है कि व्यक्ति पुत्री की अपेक्षा पुत्र के विवाह के अवसर पर अधिक प्रसन्न दिखाई देता है। हमारे देश में पुत्रियों को पराया धन माना जाता है और पुत्रों को अपना वारिस माना जाता है और हर माता–पिता का सपना होता है कि उनका पुत्र उनके बुढ़ापे में उनका सहारा बनेगा, उनकी सेवा करेगा, उनकी हर जरूरत को पूरा करेगा। लेकिन उनका यह सपना उस समय टूट जाता है जब उनके बच्चे बूढ़े हो चुके माता–पिता की कुर्बानियों को भूल जाते हैं और अपने माता–पिता को बोझ समझने लगते हैं। उन्हें उनके ही घर में रखना पसंद नहीं करते। वह यह भूल जाते हैं कि उनके माता–पिता ने किस प्रकार खुद मुश्किलों का सामना करके उन्हें पाला है इस लायक बनाया है कि वह स्वयं अपने जीवन का निर्वाह कर सके आजकल नित्य समाचार पत्र में यह पढ़ने को मिलता है कि किस प्रकार पुत्र अपने माता–पिता को वेदनाएं देते हैं। अभी हाल ही में एक पुत्र ने एक अपनी नब्बे वर्षीय बुजुर्ग मां को घर से यह कहकर की वह उसे तीर्थ यात्रा कराने के लिए ले जा रहा है और उसे धोखा देकर रेलवे स्टेशन पर छोड़ आया। पुलिस वालों ने उस वृद्धा को वृद्धाआश्रम में भेज दिया। उस वृद्धा के अनुसार उसका बेटा और बहू उसे बहुत यातनाएं देते थे, मार पिटाई करते थे और भोजन भी नहीं देते थे। वहीं माता–पिता जो बच्चों को भूख लगने से पहले भोजन उपस्थित कर देते वही अब बच्चों के होते हुए भी भूखे रहने को मजबूर हैं।

ऐसी नौबत आने पर लोगों के दिलो दिमाग में एक ही नाम आता है 'वृद्धाआश्रम'। यह नाम प्राचीन काल में शायद ही सुनने को मिलता था परन्तु आधुनिक युग में यह नाम काफी जाना पहचाना है। लोग अपने माता–पिता को वृद्धाआश्रम में भेज देते हैं। यह सब आधुनिक युग एवं पश्चिमी सभ्यता का दुष्प्रभाव है। कई बार तो वृद्धों की ऐसी नोबत आ जाती है कि वे आत्महत्या करने पर मजबूर हो जाते हैं। उन्हें अपने सुखी जीवन की एक–एक घटना याद आने लगती है। वे खुशियां, वो प्यार जो परिवार में था, सदा उनकी आंखों के सामने एक–एक करके आने लगते हैं। उनकी आंखों में आंसू भर आते हैं, मन में कही न कहीं वेदना के साथ–साथ क्रोध की भावना भी आती है लेकिन इस क्रोध के बावजूद उनके मन से अपने बच्चों के लिए आर्शीवाद ही निकलता है।

आओ हम सब मिलकर इस बुराई की जड़ में जाएं और मालूम करें कि यह सामाजिक समस्या कहां से आई। परन्तु इसका उत्तर हमारे ही पास हैं कि जो लोग ऐसा करते हैं वे कोई और नहीं बल्कि हम और आप जैसे लोग हैं जो आधुनिकता का ढोंग करते हैं एवं अपनी नैतिक जिम्मेदारियों से दूर भागते हैं।

या हम युवाओं का अपने माता–पिता के प्रति यही कर्त्तव्य है। हमने इस सामजिक बुराई को इतनी सहजता से क्यों स्वीकार कर लिया। इस बुराई से ग्रसित होकर क्या हम अपनी आने वाली पीढ़ी से अपने प्रति अच्छे व्यवहार की कामना कर सकते हैं?जी नहीं, हम स्वयं बुरे बनकर अपने बच्चें से अपने प्रति अच्छे आचरण की कामना नहीं कर सकते क्योंकि बच्चे अपने मां–बाप से ही सीखते हैं। माता–पिता के संस्कार ही बच्चों में पनपते हैं। अगर हम ही अपने माता–पिता सास–ससुर की सेवा नहीं करेंगे तो हमें अपने बच्चों से भी यह उम्मीद नहीं करनी चाहिए कि वह हमारे बुढ़ापे में हमारा ध्यान रखेंगे। इसलिए यदि हम अपने बच्चों से अच्छे व्यवहार की उम्मीद करते हैं तो हमें भी अपने माता–पिता के साथ अच्छा व्यवहार करना होगा। यदि हमें इस सामाजिक बुराई को खत्म करना है तो इसकी पहल हम युवाओं को ही करनी होगी। इसके लिए सबसे पहले हमें अपने दृष्टिकोण को बदलना होगा। हमें अपने अंदर सहनशीलता को लाना होगा और अपने बुर्जुगों को पूरा मान सम्मान देना होगा।

– नीरू शर्मा
पुस्तकालय सहायक

+++

हास्य कविता

मण्डप में कहने लगी,
हमसे मिस दस्तूर,
औरतों की ही मांग में,
भरते क्यों सिन्दूर,
आदमी बच जाते हैं।

हमने कहा मैडम ....
यदि हम आदमी भी,
अपनी मांग में सिन्दूर भरवाते,
तो दुनिया भर के गंजे,
कवारे रह जाते।

– सुलभ अग्रवाल
मैनेजमेंट ट्रेनी, ई.आर.पी.

+++

देश को एकता के सूत्र में आबद्ध करने की शक्ति केवल हिन्दी में है।
– इंदिरा गांधी

माँ की करूणा

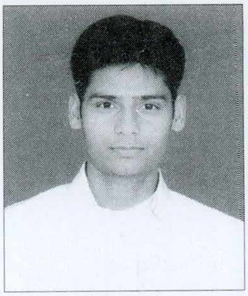

कितनी करूणा भरी हुई है माँ के पावन प्यार में
माँ सम अमृतानन्द न कोई इस नश्वर संसार में।

माँ के अनमोल बोल तो मर्म ब्रह्म का खोलते
माँ की मंगलमय वाणी से स्वयं वेद ही बोलते
झर–झर झरता अमृत लोक–हित माँ के उच्चार में
माँ सम अमृतानन्द न कोई इस नश्वर संसार में।

बन जाते हैं सुमन कुमन भी माँ के उर्मिल प्यार से
ताप स्वयं शीतल हो जाते प्रेम भरे उपचार से
अशरण को भी शरण मिली है माँ के इस दरबार में
माँ सम अमृतानन्द न कोई इस नश्वर संसार में।

भरा हुआ है माँ में सागर ज्ञान और विज्ञान का
मिल जाता है मार्ग सभी को सहज आत्मसंधान का
भव–सुमन खिलते हैं उनके प्रेमिल पुण्य विचार में
माँ सम अमृतानन्द न कोई इस नश्वर संसार में।

माँ में है तेज राम का और प्रेम घनश्याम का
जो न हुआ घनश्याम राम का वह जीवन किस काम का
है हर प्राणी का प्रवेश माँ के इस संसार में
माँ सम अमृतानन्द न कोई इस नश्वर संसार में।

– धर्मेन्द्र कुमार शर्मा
कॉन्ट्रेक्ट इंजीनियर, इर्न्फमेशन सर्विस

+++

जैसे कि माँ थपक के, मुझ को सुला रही हैं

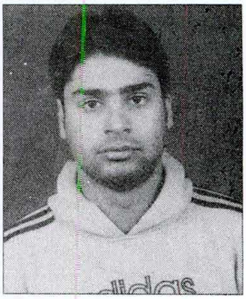

लकड़ी के ये खिलौने, दिल को लुभा रहे हैं।
बचपन के दिन सुहाने, फिर याद आ रहे हैं।

बचपन जहाँ पे बीता, वो घर यहीं कहीं है।
वो रीछ वो मदारी, बंदर यहीं कहीं है।
बच्चे कहीं पे मिलके, हल्ला मचा रहे हैं।
बचपन के दिन सुहाने, फिर याद आ रहे हैं।

नादान से वो सपने, छुटपन मे जो बुने थे।
किस्से बड़े मजे के, दादी से जो सुने थे।
किस्से वो याद आकर, फिर से गुदगुदा रहे हैं।
बचपन के दिन सुहाने, फिर याद आ रहे हैं।

भाई ने प्यार से ज्यूँ आवाज दी है मुझको।
काका ने जैसे कोई ताकीद की है मुझको।
ऐसा लगा पिताजी, मुझे बुला रहे हैं।
बचपन के दिन सुहाने, फिर याद आ रहे हैं।

ये किसकी गुनगुनाहट, लोरी सुना रही है।
जैसे कि माँ थपक के, मुझ को सुला रही है।
क्यूं नींद में ये आसूँ बहते ही जा रहे हैं।
बचपन के दिन सुहाने, फिर याद आ रहे हैं।

– गौरव गोत्रा
सह परियोजना अभियंता, एच.आई.एस.

+++

हिन्दी भारत की अधिकांश जनता द्वारा बोली और समझी जाने वाली भाषा है।

राजभाषा विभाग द्वारा जारी वर्ष 2009-2010 के वार्षिक कार्यक्रम के आधार पर सी-डैक, नोएडा द्वारा प्राप्त किए जाने वाले लक्ष्य

क्र.सं.	कार्य विवरण	लक्ष्य
1	हिंदी में मूल पत्राचार (तार, बेतार, टेलेक्स, फैक्स, आरेख, ई–मेल आदि सहित)	क क्षेत्र के साथ 100% ख क्षेत्र के साथ 100% ग क्षेत्र के साथ 100% क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति के साथ 100%
2	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%
3	हिंदी में टिप्पण	75%
4	हिंदी टंकक, आशुलिपिक की भर्ती	100%
5	हिंदी में डिक्टेशन	20%
6	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%
7	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%
8	हिंदी ई–बुक सहित हिंदी पुस्तकों आदि जर्नल और मानक संदर्भ ग्रंथों को छोड़कर की खरीद पर पुस्तकालय के लिए उपलब्ध कुल अनुदान में से खर्च का प्रतिशत	50%
9	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद	100%
10	वेबसाइट	100% (द्विभाषी)
11	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रर्दशन	100% (द्विभाषी)
12	कार्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)
13	राजभाषा संबंधी बैठकें नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति राजभाषा कार्यान्वयन समिति	 वर्ष में 02 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक) वर्ष में 04 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)
14	कोड, मैनुअल, फार्म, प्रक्रिया साहित्य का हिन्दी अनुवाद	100%
15	कार्यालय के ऐसे अनुभाग जहां सारा कार्य हिंदी में हो	20% (न्यूनतम अनुभाग–8)

राजभाषा नीति संबंधी प्रमुख निदेश

1. राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3 (3) के अंतर्गत संकल्प, **सामान्य आदेश**, नियम, अधिसूचनाएं, प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्टें, प्रेस विज्ञप्तियां, संसद के किसी सदन या दोनों सदनों के समक्ष रखी जाने वाली प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्टें, सरकारी कागजात, संविदाएं, करार, अनुज्ञप्तियां, अनुज्ञापत्र, **टेंडर नोटिस** तथा टेंडर फार्म आदि द्विभाषी रूप में ही जारी किए जाने चाहिए। **किसी प्रकार के उल्लंघन के लिए हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी को जिम्मेदार ठहराया जाएगा।**

2. सभी सेवाकालीन विभागीय तथा पदोन्नति परीक्षाओं में अभ्यर्थियों को प्रश्न–पत्रों के उत्तर हिंदी में भी देने की छूट दी जाए। प्रश्न–पत्र अनिवार्यतः दोनों भाषाओं (हिंदी और अंग्रेजी) में तैयार कराए जाएं। जहां साक्षात्कार लिया जाना हो, वहां भी प्रश्नों के उत्तर हिंदी में देने की छूट दी जाए।

3. सभी प्रकार की वैज्ञानिक / तकनीकी संगोष्ठियों तथा परिचर्चाओं आदि में वैज्ञानिकों आदि को राजभाषा हिंदी में शोध पत्र पढ़ने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित किया जाए। उक्त शोध–पत्र संबद्ध मंत्रालय / विभाग / कार्यालय आदि के मुख्य विषय से संबंधित होने चाहिए।

4. सभी प्रकार का प्रशिक्षण, चाहे वह अल्पावधि का हो अथवा दीर्घावधि का, सामान्यतः हिंदी माध्यम से होना चाहिए।

5. अंतरराष्ट्रीय संधियों और करारों को अनिवार्य रूप से हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार कराया जाए। विदेशों में निष्पादित संधियों और करारों के प्रामाणिक अनुवाद तैयार कराके रिकार्ड के लिए फाइल में रखे जाएं।

6. लॉग बुक में प्रविष्टियां, लिफाफों पर पते लिखना, कर्मचारियों के यात्रा भत्ते, अवकाश, भविष्य निधि, आवास निर्माण अग्रिम, चिकित्सा संबंधी कार्य, बैठकों की कार्यसूची–कार्यवृत्त आदि हिन्दी में होने चाहिए।

7. लेखन सामग्री, नाम पट्ट, सूचना–पट्ट, फार्म, प्रक्रिया संबंधी साहित्य, रबड़ की मोहरें, निमंत्रण पत्र आदि अनिवार्य रूप से हिंदी–अंग्रेजी में बनवाए जाएं।

8. वरिष्ठ अधिकारियों का यह संवैधानिक दायित्व है कि वह अपने सरकारी कामकाज में अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग करें। इससे उनके अधीन कार्य कर रहे अधिकारियों / कर्मचारियों को प्रेरणा मिलेगी तथा राजभाषा नीति के अनुपालन को गति मिलेगी।

9. हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए चलाई गई विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं का व्यापक प्रचार–प्रसार करें ताकि अधिक से अधिक अधिकारी / कर्मचारी इन योजनाओं का लाभ उठा सकें और सरकारी कामकाज में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में हो।

10. राजभाषा विभाग द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों में अपने कर्मचारियों को नामित करें।

11. सभी कार्यालय अपने–अपने दायित्वों से संबधित विषयों पर **हिंदी में मौलिक पुस्तक–लेखन** को प्रोत्साहित करने तथा अपने विषयों से संबंधित **शब्द भंडार को समृद्ध करने के लिए आवश्यक कदम उठाएं**

12. अपने कार्यालय में हिंदी में कार्य का माहौल तैयार करने के लिए **हिंदी में पत्रिकाएँ प्रकाशित करें।**

सी डैक
CDAC

प्रगत संगणन विकास केन्द्र

अनुसंधान भवन, सी - 56/1, सेक्टर - 62, नौएडा - 201 307, भारत
फोन : +91-120-240 2551-60, फैक्स : +91-120-2402569
शैक्षणिक निकाय : बी - 30, सेक्टर - 62, नौएडा - 201 307, भारत,
फोन : +91-120-306 3371-73, फैक्स : +91-120 306 3374,
www.cdacnoida.in

संचार एवं सूचना प्रोद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार की एक वैज्ञानिक संस्था

Concept & design : Airads Ltd.